मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान
अगस्त-६१

यह तो दुर्लभ, अमृत प्याले हैं

तीन नई आडियो कैसेट

जिसमें पूज्य गुरुदेव ने दिया है, शिष्यों को मधुर अमृतपान

★ पूर्ण शिवत्व जागरण

पारदेश्वर शिवलिंग की विधि-विधान सहित पूजा, साधना किस प्रकार की जाय, और शक्ति, जो शिवत्व का आधार है, कैसे प्राप्त हो सकती है, पूर्ण विवेचन—गुरु वाणी से।

★ भौतिक जीवन सिद्धि

विशेष सिद्धिप्रदायक मंत्र क्या हैं, उनका उच्चारण, प्रयोग-विधि क्या है, और कैसे विशेष मन्त्र-साधना सम्पन्न की जाय, एक प्रत्यक्ष विवेचन।

★ सिद्धाश्रम दीक्षा

शिष्य के लिए माध्यम केवल गुरु ही है, और गुरुदेव उसे दीक्षा दे कर अपना अंश प्रदान कर देते हैं, सिद्धाश्रम दीक्षा सबसे महत्वपूर्ण दीक्षा है, जिसे प्राप्त कर शिष्य अपनी कमियों, दोषों को दूर कर देता है, ऐसी दुर्लभ दीक्षा से युक्त अद्वितीय कैसेट।

प्रत्येक कैसेट का मूल्य २४)रुपये

गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर सम्पन्न पूज्य गुरुदेव के प्रवचन के अंश भी इन तीन कैसेटों में सम्मिलित हैं, और ये तीनों कैसेटें केवल सुनने के लिए ही नहीं, अपितु मनन कर अपने जीवन में दिव्यता उत्पन्न करने की विधा है।

नोट : — अग्रिम धनराशि भेजने की जरूरत नहीं है, आप केवल पत्र द्वारा सूचना दे दें, हम आपको सम्बन्धित कैसेटें वी०पी० द्वारा भेज देंगे।

केवल पत्रिका सदस्यों को ही ये दुर्लभ कैसेटें प्राप्त करने का अधिकार होगा।

सम्पर्क :— 'मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान' डा० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी, जोधपुर-३४२००१ (राजस्थान)

वर्ष–११

अंक–८

अगस्त-१९९१

* * * * * * * * * * * * *

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और
भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

गुरु सत्यं गुरुर्शास्त्रं गुरुर्वेदो गुरुर्गति ।
गुरुमेव महत् सर्वं तस्मै श्री गुरुवे नमः ।।

गुरु ही सत्य है, गुरु ही शास्त्र है, गुरु ही वेद है और गुरु से ही गति प्राप्त हो सकती है, सही अर्थों में तो गुरु ही सब कुछ होता हैं, इसलिए सभी देवताओं को प्रणाम करने से पूर्व में अपने गुरु को प्रणाम करता हूं ।

जीवन्त गुरुदेव के साथ रहना तो
अंगारों पर चलने के समान है

संसार में पिछले कई हजार वर्षों से जितने भी लोग पैदा हुए हैं या जीवित हैं, वे किसी न किसी देवता को या गुरु को मानते रहे हैं, भारत में ही नहीं अपितु पूरे संसार में ऐसा कोई भी क्षण नहीं आया जब धर्म या अध्यात्म का लोप हो गया हो, या देवता, इष्ट अथवा गुरु की महत्ता कम हो गई हो।

यह अलग बात है, कि यह महत्ता और यह साधना अथवा अध्यात्म का स्वरूप बदलता रहा हो, कभी इसने पूजा-पाठ का रास्ता पकड़ा, तो कभी इसने भक्ति का, कभी शरीर को सुखा कर तपस्या करने को ही जीवन का ध्येय माना गया, तो कभी साधनाओं में पूर्ण सफलता और श्रेष्ठता।

पर कभी भी पथ प्रदर्शक या गुरु की महत्ता कम नहीं हुई क्योंकि बिना गुरु के उस अध्यात्म का रास्ता कौन दिखायेगा ? जब कोई साधनात्मक रास्ता बनता है, तो उसमें कंकर, पत्थर, कांटे आदि आ ही जाते हैं, उस समय गुरु ही उन कांटों को हटाकर शिष्य या साधक के लिए उसका रास्ता प्रशस्त करता है, उसे मार्गदर्शन देता है, और उसे बताता है कि उसे अपने जीवन में क्या छोड़ देना चाहिए, और किसे अपनाना चाहिए।

और यह सत्य युगधर्म के अनुसार बदलता रहा है, एक समय ऐसा था जब वशिष्ठ, विश्वामित्र, गर्ग, अत्रि, कणाद जैसे ऋषि हुए और तपस्या को श्रेष्ठ मार्ग बताया, पर फिर ऐसा भी समय आया जब तपस्या के स्थान पर भक्ति की लहर पूरे संसार में बढ़ी और ऐसे समय में कबीर, सूर, तुलसी, नानक आदि कई संत हुए, जिन्होंने भक्ति को ही जीवन की पूर्णता बताया।

पर इनमें सत्य क्या है, कौन सा रास्ता प्रामाणिक है, और किस रास्ते पर चल कर जीवन को पूर्णता प्रदान की जा सकती है, इसका निर्णय तो गुरु ही कर सकता है, गुरु ही अपने शिष्य को बता सकता है, कि इस समय सैकड़ों रास्ते, सैकड़ों पंथ, सैकड़ों वाद हैं, पर ये सब ढोंग हैं, ढकोसला हैं, पाखण्ड हैं, इनमें से केवल यही रास्ता पूर्णता देने वाला है, इसी रास्ते पर चल कर तुम्हारा कल्याण हो सकेगा।

जैसा कि मैंने ऊपर बताया कि जीवन के आदिकाल से अब तक गुरु की महत्ता बराबर बनी रही है, परन्तु बहुत कम सौभाग्यशाली ऐसे होते हैं जो अपने जीवन में जीवन्त गुरु को प्राप्त करने में सक्षम हो पाते हैं, ऐसा तो जीवन के पुण्योदय से, प्रारब्ध और पूर्व जन्म के संस्कारों से ही संभव हो पाता है।

जीवन्त गुरु

और फिर गुरु तो कई प्रकार के इस पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं, अधिकांश गुरु ऐसे हैं जो सही अर्थों में गुरु न हो कर भिक्षुक हैं, और उजले वस्त्रों में अथवा भगवे वस्त्रों में सभ्य भिक्षुक हैं, जो ऊपर से चोंगा तो गुरु का पहने हुए होते हैं पर उनके पास ज्ञान की गरिमा नहीं होती, उनके चेहरे पर तेज और प्रकाश नहीं होता, उनकी वाणी में पैनी धार नहीं होती, और उनमें वह हिम्मत, आक्रामक शक्ति भी नहीं होती कि वह शिष्य की कमियों पर प्रहार कर सकें, वह चापलूसी से, शिष्य की प्रशंसा करके उससे दान-दक्षिणा ले लेने में ही जीवन का सौभाग्य समझते हैं, ऐसे गुरु बड़े-बड़े मठ बनवा सकते हैं, ऐसे गुरु ऊंचे शिखर वाले मन्दिरों का निर्माण कर सकते हैं, परन्तु जीवित मन्दिर बनाने की सामर्थ्य उनमें नहीं होती, अपने शिष्य के मस्तिष्क को शिखर तक पहुंचाने की क्षमता उनमें नहीं होती, वे तो मन्दिर के नाम पर, कमरा बनाने के नाम पर, पत्थर जड़वाने के नाम पर, एक

व्यापार या दुकान खोल कर बैठे हैं, और फिर सबके सामने कोई शिष्य या अनुयायी जो भी देता है, जोर से उसकी बोली लगाई जाती है, और ऐसा सबके सामने सुनकर उस शिष्य को आन्तरिक प्रसन्नता होती है, कि मैंने जो कुछ दान किया, गुरु जी ने सबके सामने उसका बखान किया !

यह व्यापार का एक ढंग है, और इससे उनका व्यापार फलता-फूलता है, और शिष्य के अहम् को आत्म सतुष्टि मिलती है, पर इससे शिष्य का, अनुयायी का कोई हित नहीं हो सकता।

कुछ गुरु लफ्फाजी में ही विश्वास करते हैं, वे किसी विशेष स्थान का चयन कर लेते हैं, ऊंचे मंच पर बैठ जाते हैं, और सौ-पचास ऐसे शिष्य के रूप में नौकर रख देते हैं, जो ऊपर से तो सभ्य और सुसंस्कृत शिष्य दिखाई देते हैं, पर हकीकत में वे उनके एजेन्ट होते हैं, उनका काम केवल ऐसे लोगों को फांसना होता है और गुरु के पास ले जाना होता है, और ऐसा करने पर उन्हें अन्दर ही अन्दर कमीशन मिलता है, इसके लिए वे कई हथकंडे अपनाते हैं, आप स्वयं ही निर्णय कर सकते हैं, कि जब गुरु का चरित्र ऐसा होगा, जब गुरु इस प्रकार का व्यापार कर रहा होगा, तो शिष्य को क्या मार्गदर्शन दे सकेगा, वह शिष्य को किस प्रकार की साधना समझा सकेगा, और वह शिष्य का किस प्रकार से हित कर सकेगा।

यह साधनाओं का युग है

वर्तमान समय और आने वाला समय साधनाओं का है, साधना के माध्यम से ही जीवन का कल्याण हो सकता है, साधनाओं द्वारा ही इष्ट प्राप्ति संभव हो सकती है, और साधना के द्वारा ही पूर्ण ध्यान प्रक्रिया में जा कर मन को एकाग्र किया जा सकता है, आज के युग की जो न्यूनता है, आज के युग में जो तनाव और परेशानियां हैं, उसे दूर करने का एकमात्र रास्ता साधना ही है, और शिष्य वर्ग जितनी जल्दी इस तथ्य को समझ लेगा, उतनी ही जल्दी वह अग्रसर हो सकेगा, उतनी ही जल्दी वह आगे की पंक्ति में खड़ा हो सकेगा, और उतनी ही ज्यादा वह अपनी समस्याओं को दूर कर जीवन में पूर्णता अनुभव कर सकेगा।

मैंने ऊपर जीवन्त गुरु की चर्चा की है, अधिकांश गुरु मुर्दा हैं, मुर्दा इस रूप में कि उनके पास वे ही शास्त्र, वे ही चर्चाएं और वे ही उपदेश हैं जो पिछले पांच हजार पीढ़ियों से दिये जाते रहे हैं, वे बदलते हुए युग को नहीं देख पाते, वे जीवन की समस्याओं को अनुभव नहीं कर पाते, वे तो अपनी दुनिया में मस्त रहते हैं, उन्हें इस बात से कोई सरोकार नहीं रहता कि किसी की समस्या क्या है, शिष्य का तनाव और परेशानी क्या है, और इन समस्याओं और तनावों से शिष्य को कैसे निकाला जा सकता है, उन गुरुओं का चिन्तन तो खाना, लेटे रहना, या इधर-उधर की राजनीति करना है, अपनी गद्दी को बचाये रखने के लिए वे सब कुछ करते रहते हैं, चेहरे पर मुस्कराहट का लबादा ओढ़ कर शिष्य को कुछ समय के लिए सान्त्वना भले ही दे दें, पर पीतल भले ही कितना ही प्रयत्न करे, वह सोना नहीं हो सकता, यह अलग बात है कि कभी-कभी या अधिकांश स्थितियों में पीतल सोने से ज्यादा चमकता है, और शिष्य की कमजोर आंखें उसकी चकाचौंध से चौंधिया जाती हैं।

परन्तु मुर्दा गुरु केवल अपना स्वार्थ-सिद्धि कर सकता हैं, शिष्य का किसी भी प्रकार से हित नहीं कर सकता, और सही बात यह है कि जो शिष्य स्वयं मुर्दा है, वही मुर्दा गुरु के साथ आनन्द अनुभव कर सकता है; जिसमें आग है, जिस शिष्य में चेतना है, वह एक क्षण भी वहां नहीं ठहर सकता, क्योंकि उसके पास ज्ञान की चेतना होती है, वह कुछ प्राप्त करना चाहता है, उसमें तड़फ होती है, एक बेचैनी होती है, और जब तक श्रेष्ठ और प्रामाणिक साधनाओं के माध्यम से उसकी बेचैनी दूर नहीं हो जाती, तब तक उसे सकून नहीं मिलता।

पर शिष्य की नियति भेड़ चाल के समान होती है, जहां ज्यादा भीड़ होती है वहीं पर शिष्य चला जाता है, उसे ऐसा अहसास होता है कि शायद यहीं पर कुछ मिलेगा, इसीलिए शंकराचार्य जैसे अद्वितीय व्यक्तित्व के पास केवल १२ शिष्य ही

उपलब्ध हुए, इसीलिए ईसामसीह जैसे संत के पास मुठ्ठी भर अनुयायी ही एकत्र हो सके, इसीलिए गोरखनाथ जैसे महायोगी के पास दो-चार शिष्य ही ठहर सके, क्योंकि जिस शिष्य के पास सही चीज परखने की आंख होती है, वही तो ऐसे गुरु के पास जा सकेगा, वही तो ऐसे गुरु को पहिचान सकेगा और वही ऐसे गुरु की सान्निध्यता का लाभ उठा सकेगा।

हमारी नियति यह हो गई है, कि हम जीवित व्यक्तियों, महापुरुषों, योगियों और श्रेष्ठजनों को नहीं पहिचानते और न उनका मूल्यांकन कर पाते हैं, मरने के बाद हम उनके स्मारक बनाते हैं, उनके मन्दिर बनाते घन्टा-घड़ियाल बजाकर उनकी आरती करते हैं और ऊंचे-ऊंचे शिखर स्थापित कर श्रद्धांजली अर्पित करने में ही अपना गौरव समझते हैं, हकीकत में हमने मुर्दों को ही महत्व देना प्रारम्भ कर दिया है, हकीकत में मुर्दों पर ही हमारी आस्था जम गई है।

भगवान श्री कृष्ण जैसा विराट व्यक्तित्व जीवन भर भर दुःख पाता रहा, गालियां खाता रहा, पर उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन नहीं किया गया, मरने के बाद हम अत्यन्त प्रसन्न हैं, और उसके मन्दिर बना रहे हैं, उसकी आरती उतार रहे हैं, और उन्हें महापुरुष सिद्ध कर रहे हैं, पर यदि हम उस जीवन्त कृष्ण के पास कुछ समय बैठते तो कितना बड़ा लाभ उठा सकते थे, कितना बड़ा ज्ञान सम्भाल सकते थे, यदि उसके लिए रास्ता अनुकूल बनाते तो हम दो-चार और "श्री मद्भगवद् गीता" जैसे ग्रन्थ प्राप्त कर पाते! यही स्थिति ईसा के साथ हुई, यही व्यवहार हमने सुकरात के साथ किया, शंकराचार्य को हमीं लोगों ने कांच घोट कर पिला दिया, हमीं लोगों ने दयानन्द को जहर दे दिया, और हमीं लोग थे जिन्होंने गोरखनाथ को तड़फने के लिए मजबूर कर दिया।

और उनके जाने के बाद हम उन्हें मानते हैं, उनकी पूजा करते हैं, उनकी आरती उतारते हैं और उन्हें भगवान की श्रेणी में रख कर अहोभाग्य समझते हैं, पर ये सभी कभी न कभी जीवित जागृत थे, समाज के बीच में थे, पर समाज के लोगों ने न तो उनका मूल्यांकन किया, न उन्हें महत्व दिया, न उनके साथ हुए और न उनकी जीवन्तता का लाभ उठा सके।

समाज तो आज भी वैसा ही है, आज भी हम जागृत जीवन्त गुरु के पास नहीं बैठ पाते, हम समय का अभाव कह कर कर्तव्य से छुट्टी पा लेते हैं, परन्तु यह अपने आपको कितना बड़ा धोखा देने का काम है, अद्वितीय, श्रेष्ठ और जीवन्त गुरु हमारे बीच है, और हम उनकी समीपता प्राप्त न कर सकें, उनके चरणों में न बैठ सकें, उनको सुविधाएं न दे सकें, और उनसे लाभ न उठा सकें, तो यह हमारी ही न्यूनता है, हानि हमारी ही हो रही है, हम एक बहुत बड़े ज्ञान से, बहुत बड़ी साधनाओं से वंचित हो रहे हैं।

और फिर जीवित गुरु के साथ रहना तो अंगारों पर चलने के समान है, क्योंकि वह हर क्षण हम पर सतर्क निगाह रखता है, वह थोड़ी सी भी चूक होने पर बता देता है, आलोचना कर देता है, दो टूक रास्ता बता देता है, और इससे हमारे अहं को चोट पहुंच सकती है, परन्तु फिर भी जो आनन्द जीवित जागृत चैतन्य गुरु के साथ कुछ क्षण व्यतीत करने का है, उसकी तुलना तो और किसी से की ही नहीं जा सकती, और फिर आने वाली पीढ़ियां, आने वाला इतिहास ऐसे व्यक्तियों का स्मरण करता है, कि समय रहते उसकी आंख खुली थीं, उसमें पहचानने की क्षमता थी, और उसके जीवन का कुछ हिस्सा ऐसे अद्वितीय, चैतन्य जीवित गुरु के साथ व्यतीत हुआ था।

और सौभाग्यशाली वे ही होते हैं, जो इतिहास में अपना नाम अंकित कर लेते हैं, इसीलिए तो ऐसे श्रेष्ठ और अद्वितीय गुरुओं के साथ रहना तलवार की धार पर चलने के समान है, अंगारों पर लोटने के समान है, पर इसका आनन्द तो अपना ही आनन्द है, और अपने आप में अद्वितीय आनन्द है। ★

पतझड़ से कह दो

कि

बसन्त आने ही वाला है

गुरु पूर्णिमा

इस वर्ष दक्षिण में अत्यन्त सुन्दर शहर बैंगलौर में २४, २५, २६ जुलाई ६१ को अत्यन्त मधुरता के साथ गुरु पूर्णिमा पर्व सम्पन्न हुआ, हमें उम्मीद नहीं थी, कि दूर-दूर से इस शिविर में भाग लेने के लिए साधक और शिष्य आ जाएंगे, क्योंकि दक्षिण भारत में यह पहला प्रयोग था और काफी दूर भी था।

परन्तु गुरुदेव के दीवानों को कोई भी नहीं रोक सकता, उनमें एक जनून है, एक उत्साह है, एक वेग और मिलने की आतुरता है और उसी स्नेह के आकर्षण में बंधे हुए सैंकड़ों-हजारों साधक, शिष्य, शिष्याएं बैंगलौर पहुंचे और उन्होंने तीन दिनों तक जो ज्ञान, जो आनन्द और जो अपनत्व प्राप्त किया, उसे तो वे ही समझ सकते हैं जिन्होंने भाग लिया।

और फिर इस गुरु पूर्णिमा शिविर में ही **"सिद्धाश्रम प्रवेश दीक्षा समारोह"** सम्पन्न हुआ जो कि अपने आपमें दुर्लभ और महत्वपूर्ण दीक्षा थी।

आयोजन को सफल बनाने में **श्री गोवर्धन जी वर्मा और** उनका परिवार, **श्री विक्रम रायतानी** और उनकी पत्नी, **लालजी भाई** आदि स्थानीय सहयोगियों ने जिस उत्साह के साथ कार्य किया, वह अपने आपने अद्वितीय था।

साधनाएं और सिद्धियां

पत्रिका में प्रकाशित साधनाओं का अपने आप में अलग महत्व है, क्योंकि ये साधनाएं प्रामाणिक होती हैं और अनुभव की कसौटी पर खरी हैं, इन साधनाओं के पीछे पूज्य गुरुदेव का अनुभव, ज्ञान और चिन्तन है, और इसीलिए सामान्य साधक ही नहीं अपितु विद्वान भी इस बात को स्वीकार कर रहे हैं, कि ये साधनाएं अपने आपमें अत्यन्त दुर्लभ और मौलिक हैं।

पूरे भारतवर्ष में सैकड़ों-सैकड़ों साधक पूरे हिम्मत और जोश के साथ उठ खड़े हुए हैं, उन्होंने दो प्रकार से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है, एक तो पत्रिका परिवार के विस्तार में रुचि लेना और कोशिश करना कि प्रत्येक

हालत में ज्यादा से ज्यादा पत्रिका के सदस्य बन सकें और अपने शहर या गांव में एक ऐसा परिवार बन सके, जहां मिल-जुल कर बैठ सकें, साधनाएं कर सकें, पत्रिका में जो साधनाएं प्रकाशित होती हैं उनको सामूहिक रूप से सम्पन्न कर सकें और इस प्रकार इस ज्ञान की चेतना को प्रसार दे सकें।

और दूसरे वे हैं जो अपने आस-पास के लोगों की समस्याओं को भी सुलझाने में लगे हैं, पत्रिका में जो छोटे-मोटे प्रयोग प्रकाशित होते हैं, उनकी जानकारी देकर उन लोगों की समस्याओं को दूर करते हैं, और इस कार्य से उन्हें जहां यश और सम्मान मिला है वहीं उन्हें अपने ऊपर भी आत्मविश्वास हुआ है।

कई साधकों के पत्र इस बात के साक्षी हैं कि उन्होंने कई प्रकार की समस्याओं के निराकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, अपने परिवार के सदस्यों, पड़ौसियों और मित्रों की समस्याओं को दूर किया, उनके लिए प्रयोग किया या उन्हें सम्बन्धित प्रयोग बताये, जिन्हें करके वे अपने जीवन की समस्याओं को दूर कर सके।

दुर्लभ साधनाएं : मात्र पत्र डालिये

आने वाले समय में हम साधकों को अत्यन्त उच्च कोटि का ज्ञान और साधनाएं देने का निश्चय कर रहे हैं, ये साधनाएं निश्चय ही अत्यधिक मौलिक, अत्यधिक दुर्लभ और गोपनीय रही हैं, परन्तु अब समय आ गया है, कि पत्रिका के पाठक और साधक इन साधनाओं को सम्पन्न कर समाज को यह बता दें, कि वे अपने आपमें श्रेष्ठ पुरुष हैं, और समाज का नेतृत्व करने की योग्यता रखते हैं।

हम उन अठारह साधनाओं को आगे की पंक्तियों में दे रहे हैं, यह केवल सूची है, आप लौटती डाक से ही पत्रिका कार्यालय को मात्र एक पत्र लिख दें कि आप कौन सी साधना करना चाहते हैं, हम उस साधना से सम्बन्धित पूरी जानकारी विस्तार से लिख कर आपके पास भिजवा देंगे।

और निश्चय ही ये साधनाएं आज के वैज्ञानिक युग में भी सौ टंच खरी हैं, दिन के सूर्य की तरह प्रकाशवान हैं, और यदि आप निश्चय कर लें तो इन साधनाओं को गारण्टी के साथ सम्पन्न कर सकते हैं।

भारतीय साधना साहित्य में अठारह सिद्धियों का वर्णन मिलता है, परन्तु ये साधनाएं सर्वथा गोपनीय रही हैं, इन साधनाओं को सार्वजनिक रूप से प्रकाशित करना भी ज्यादा उचित प्रतीत नहीं होता, इसीलिए आप में से प्रत्येक को आह्वान किया जाता है कि आप आगे आवें और इनमें से किसी एक साधना का चयन कर लें, और हमें लौटती डाक से सूचना दें, कि आप कौन सी साधना करना चाहते हैं।

हम इन साधनाओं का विस्तार से विवरण तो देंगे ही, उन बारीकियों को भी स्पष्ट करेंगे, जिसके माध्यम से निश्चित सफलता प्राप्त होती है, साथ ही साथ आपमें से कुछ साधकों और शिष्यों को व्यक्तिगत रूप से भी जोधपुर अपने खर्चे पर बुला कर उन्हें इन से सम्बन्धित साधनाओं का निःशुल्क अवसर प्रदान करेंगे।

ये अठारह साधनाएं या **"अष्टादस सिद्धियां"** निम्न प्रकार से हैं—

१- अणिमा

पत्थर की चट्टान आदि में प्रवेश करने की शक्ति प्राप्त कर लेना और अपने शरीर को अणु के समान लघु बना कर कहीं पर आने-जाने की क्षमता प्राप्त कर लेना।

२- महिमा

इस सिद्धि के माध्यम से साधक किसी भी वस्तु को या अपने शरीर को जितना भी चाहे बड़ा बना सकता है, जिस प्रकार से लंका प्रवेश के समय राक्षसी सुरसा के सामने हनुमान ने अपना रूप और शरीर सौ योजन तक लम्बा और ऊंचा बना दिया था।

३- लघिमा

जिस प्रकार से महिमा सिद्धि के द्वारा शरीर को विस्तृत आकार दिया जा सकता है, उसी प्रकार लघिमा

सिद्धि के द्वारा अपने शरीर को या किसी वस्तु को अत्यन्त लघु रूप बना कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ-जा सकते हैं, जिस प्रकार से सुरसा के सामने हनुमान जी शरीर बढ़ाया और जब सुरसा ने भी सौ योजन शरीर बढ़ा दिया तो श्री हनुमान जी लघिमा सिद्धि द्वारा अत्यन्त छोटा रूप धारण कर उसके शरीर में से निकल गये।

४- प्राप्ति

इस सिद्धि के द्वारा साधक किसी भी वस्तु को शून्य में से प्रगट कर सकता है या किसी भी व्यक्ति को दूर से भी इस सिद्धि के द्वारा बुला कर प्रगट कर सकता है।

५- प्राकाम्य

अठारह सिद्धियों में से इस सिद्धि के द्वारा साधक जिस वस्तु की भी याचना या कामना करता है, वह वस्तु तुरन्त उसे प्राप्त हो जाती है फिर वह स्थान भले जगल हो या साधक कहीं पर भी बैठा हो, उसके लिए संसार की सारी वस्तुएं सुलभ होती हैं।

६- ईशित्व

इस साधना या सिद्धि के द्वारा किसी भी शरीर को किसी भी दूसरे शरीर में या जीवन में परिवर्तित किया जा सकता है, यद्यपि यह बात अटपटी सी प्रतीत होती है पर उच्च कोटि की साधना या सिद्धि के द्वारा यह सम्भव है।

७- वशित्व

इस सिद्धि के द्वारा साधक किसी को भी अपने आकर्षण में बांध सकता है जड़ या चेतन किसी पर भी पूर्ण वशीकरण प्रयोग कर सकता है।

८- कामावसायिता

इस सिद्धि के द्वारा व्यक्ति अपने जीवन की सारी इच्छाओं को पूरी कर सकता है, और अपने जीवन में वह जो कुछ भी चाहता है, वह तुरन्त प्राप्त करने में सक्षम हो जाता है, उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं होता।

९ शुद्धस्वरूप की प्राप्ति

यह अपने आप में महत्वपूर्ण साधना है, इस साधना के माध्यम से १-भूख, २-प्यास, ३-जन्म, ४-मृत्यु, ५-शोक ६-मोह इन छः ऊर्मियों से साधक रहित हो जाता है और वह जितने दिन चाहे बिना पानी के या बिना भोजन के स्वस्थ और निरोग रह सकता है।

१०- दूर श्रवण

इस साधना और सिद्धि के माध्यम से साधक ब्रह्माण्ड में रहने वाले विभिन्न प्राणियों की आवाजों को और उनके शब्दों को सुन सकता है, और समझ सकता है और उनसे बात-चीत कर सकता है।

११- दूरदर्शन

एक स्थान पर बैठा हुआ व्यक्ति सारे संसार की गतिविधियों को देखने की शक्ति प्राप्त कर सकता है, और मन चाहे स्थान पर यह देख सकता है, कि कौन व्यक्ति क्या कर रहा है या किस स्थान पर क्या घटना घटित हो रही है।

१२- मनोजव

इस सिद्धि के द्वारा साधक जहां जाने का संकल्प करे या एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना हो तो तत्क्षण सशरीर वहां कुछ ही सैकण्डों में पहुंच सकता है और वापिस आ सकता है।

१३- स्वेच्छा-वपु

इस सिद्धि के द्वारा व्यक्ति किसी भी देवता या मनुष्य का मनचाहा रूप धारण कर सकता है, और ठीक उसके अनुरूप अपना शरीर हाव-भाव बना सकता है।

१४- परकाया-प्रवेश

इस सिद्धि के द्वारा साधक किसी जीवित या मृत शरीर में अपने आपको प्रवेश दे सकता है, और जितने समय तक चाहे उस दूसरे शरीर में रह सकता है और फिर अपनी इच्छा होने पर अपने मूल शरीर में आ सकता है।

१५- इच्छित-मृत्यु

जिस प्रकार से भीष्म पितामह को इच्छा मृत्यु का वरदान मिला हुआ था उसी प्रकार इस सिद्धि के द्वारा साधक जितने समय तक चाहे जीवित रह सकता है और जब वह चाहेगा तभी उसे मृत्यु स्पर्श कर सकेगी।

१६- देवक्रीड़ा दर्शन

इस सिद्धि के द्वारा साधक किसी भी देवता या ऋषि के पास आ-जा सकता है, वार्तालाप कर सकता है, या उसके साथ समय व्यतीत कर सकता है, इसी प्रकार वह इस सिद्धि के द्वारा किसी भी किन्नरी या अप्सरा अथवा सुर-सुन्दरी को बुला कर उसके साथ विहार कर सकता है।

१७- संकल्प-सिद्धि

इस महत्वपूर्ण सिद्धि के द्वारा साधक जिस समय जो भी संकल्प करे, वह संकल्प तत्क्षण सम्पन्न और पूरा हो जाता है, इसीलिए इस सिद्धि को विशेष महत्व दिया गया है।

१८- प्रभुत्व

इस सिद्धि के द्वारा साधक को पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त हो जाता है और बिना ना-नूच के सभी लोग उसकी आज्ञा पालक बन जाते हैं।

फिलहाल आप अपना नाम, अपना पूरा पता और अपना व्यवसाय, उम्र, आदि लिखते हुए पत्र के द्वारा हमें सूचित करें कि आप उपरोक्त साधनाओं में से किस साधना को सम्पन्न करना चाहते हैं, हम इस साधना में पूरी तरह से आपके साथ हैं।

साधना करें

पत्रिका में समय-समय पर साधनाएं प्रकाशित होती रहती हैं और ये सभी साधनाएं आपके लिए महत्वपूर्ण हैं।

आपको चाहिए कि आप इनमें से अधिकांश साधनाएं सम्पन्न करें, इस बात की चिन्ता आप न करें कि आपको सफलता मिल रही है या नहीं अथवा आपको अनुभूति हो रही है या नहीं, यह तो गुरुदेव का कार्य है, साधना करते समय आपको जो विचार आवे, स्वप्न आवे, या जो अनुभूति स्पष्ट हो, उसे पत्र में लिख कर गुरुदेव के पास भेज देनी चाहिए, इसके माध्यम से ही यह ज्ञात हो जाता है कि आप सफलता के किस भाग पर हैं, और आप किस स्थिति में हैं।

अधिकांश साधनाओं को करने से साधक का शरीर मजबूत वज्र की तरह दृढ़ हो जाता है, उसमें साधना की ऊर्मियां प्रकाशित होने लगती हैं और चेहरे पर एक विशेष तेज दिखाई देने लगता है, जिससे आप समाज में अपने आपमें ही अलग-थलग और अद्वितीय पुरुष होते हैं।

जब आप साधना प्रारम्भ करें तब उसकी सूचना दें ही, जब वह साधना पूरी कर लें, तब भी उससे सम्बन्धित सूचना और जानकारी पत्रिका कार्यालय को भेजनी चाहिए।

अमेरिका में साधना शिविर

अमेरिका में एक महत्वपूर्ण साधना शिविर का आयोजन होने जा रहा है, जिसमें पूरे भारतवर्ष में फैले हुए कम से कम सौ साधक-साधिकाओं, शिष्य-शिष्याओं को निःशुल्क ले जाने की व्यवस्था है।

गुरुदेव की इच्छा है कि तब तक कुछ साधक अपने आपमें सक्षम और तैयार हो जांय, जिससे कि वे वहां साधकोचित व्यवहार कर सकें, उनकी बातचीत में एक गरिमा और तेज प्रतीत हो सके, उनकी वाणी में दृढ़ता आ सके, और वे कुछ साधनाओं में सफलता प्राप्त किये हुए हों, जिससे कि वे वहां उन साधनाओं को स्पष्ट कर उन्हें विश्वास दिला सकें, कि इस वैज्ञानिक युग में भी भारतीय साधनाएं अपने आपमें महत्वपूर्ण और प्रामाणिक हैं।

शीघ्र ही इस सम्बन्ध में विस्तार से पत्र साधकों के पास पहुंच रहे हैं, और जो साधक ज्यादा रुचि लेने की इच्छा रखते हों, उन्हें चाहिए कि वे पूज्य गुरुदेव से सम्पर्क स्थापित करें, टेलीफोन या पत्र द्वारा अपनी इच्छा व्यक्त करें और पूरी दृढ़ता के साथ साधनाओं में भाग लें, जिससे कि सफलता प्राप्त हो सके, और वे सही अर्थों में साधक सिद्ध हो सकें। ★

अब गर्व से कहो

मां लक्ष्मी ! हम तेरे याचक नहीं उपासक हैं

और

अब तो तुझे सिद्ध होना ही पड़ेगा

महालक्ष्मी कल्पवास

जिन तीन दिनों में लक्ष्मी भण्डार साधक के लिए खुल जाते हैं

लक्ष्मी—जो कि धन, वैभव, सौभाग्य की अधिष्ठात्री देवी है, उसकी पूजा, साधना, आराधना, उपासना, ध्यान व प्राप्ति की इच्छा हर व्यक्ति, स्त्री-पुरुष रखता है, जिसके पास निर्धनता है, वह धनवान बनना चाहता है, और जो धन से युक्त है, वह और अधिक धन प्राप्त करना चाहता है. लक्ष्मी एक ऐसी अमिट अमृत प्यास है, जो जितनी पिओ, इच्छा उतनी ही अधिक बढ़ने लगती है. जीवन की सारी आवश्यकताएं लक्ष्मी कृपा से ही पूर्ण होती हैं, लक्ष्मी के बिना जीवन नरक के समान हो जाता है।

ऐसा नहीं है कि इस कलियुग में ही लक्ष्मी का महत्त्व बढ़ गया है, लक्ष्मी की प्रधानता तो युगों-युगों से रही है, वेदों में भी लक्ष्मी की प्रशंसा में हजारों श्लोक लिखे गये हैं, महाभारत के रचियता महर्षि व्यास महाभारत में लिखते हैं, "**पुरुषा धनं वधः**" अर्थात् लक्ष्मी का अभाव तो मनुष्य के लिए मृत्यु का चिन्ह है।

"**भर्तृहरि संहिता**" में नीति वाक्य लिखा है, कि जिसके पास लक्ष्मी है, वही पंडित है, गुणवान है, विद्वान है, रूपवान है, आदर्श है, जिसके पास लक्ष्मी है, उसके पास सम्मान है, प्रतिष्ठा है।

लक्ष्मी के अभाव का तात्पर्य दरिद्रता है और शास्त्र कहते हैं, "सर्व कष्टा दरिद्रता" अर्थात् दरिद्रता सब कष्टों को देने वाली है, जो दरिद्र है, उसके पास कष्ट एक के बाद एक आते ही रहते हैं।

लक्ष्मी ही क्यों ?

लक्ष्मी को चंचला भी कहा गया है, अर्थात् लक्ष्मी एक जगह स्थिर नहीं रह सकती, लक्ष्मी कहीं भी निवास नहीं कर सकती है, जो लक्ष्मी प्राप्ति हेतु कर्मशील है, लक्ष्मी उसी का वरण करती है, उसके पास न तो जात-पांत का नियम है, न ही रूप का नियम है, उसके पास तो एक ही नियम है, कि जो सच्चे अर्थों में उसकी पूजा साधना, आराधना सम्पन्न करेगा, लक्ष्मी उसी के पास रहेगी।

- लक्ष्मी केवल ऐसे घर में निवास कर सकती है, जहां उसकी नित्य पूजा, आराधना सम्पन्न होती हो।
- जहां कर्म को, परिश्रम को प्रधानता दी जाती है, आलस्य का त्याग किया जाता है, वहां लक्ष्मी निवास करती है।
- जहां आपस में प्रेम और स्नेह हो, मन में उत्साह, कामना हो, वहां लक्ष्मी स्थायी निवास रहता है।
- जहां सच्चाई, ईमानदारी, विश्वासपात्रता, दृढ़ निश्चय हो, वहां लक्ष्मी का निवास रहता है।
- लक्ष्मी योग्यता, चतुराई, श्रेष्ठ कर्मों से फलती-फूलती है, और 'ब्रह्मवैवर्त पुराण' के 'गणेश खण्ड' में लक्ष्मी का वचन है, कि मैं श्रेष्ठ कर्म करने वाले, नीति के अनुसार चलने वाले श्रेष्ठ व्यक्ति, चाहे वह गृहस्थ हो अथवा राजा, के घर में निवास करती हूं, जहां माता-पिता, गुरु, अतिथि का सत्कार नहीं, वहां मैं निवास नहीं कर सकती।
- दुराचारी, मिथ्यावादी, अविश्वासी, चिन्ताशील, पापी, कृपण, ऋणी के घर लक्ष्मी निवास नहीं करती, यदि ऐसा व्यक्ति थोड़ा धन कमा भी ले, तो थोड़े ही दिन में वह धन नष्ट हो जाता है।
- जहां पूजा, साधना, उपासना, व्यवहार कुशलता, कर्म है, वहां लक्ष्मी स्थायी रूप से रहती है, और लक्ष्मी युक्त जीवन ही श्रेष्ठ जीवन है. आदर्श जीवन है, जो लक्ष्मी प्राप्त कर उसका उचित उपयोग करता है, उसे श्रेष्ठ कार्यों में लगाता है, उसकी वृद्धि की ओर प्रेरित रहता है, वहां लक्ष्मी निरन्तर अपनी कृपा का प्रकाश देती रहती है।

लक्ष्मी पूजा—सिद्ध मुहूर्त

वर्ष में एक दिन अर्थात् दीपावली को लक्ष्मी पूजा, साधना का सिद्ध मुहूर्त है, और हर व्यक्ति अपने अनुसार इस दिन पूजा अवश्य करता है, इस पूजा साधना के भी कई भेद हैं, प्रकार हैं, उन्हें पूरी तरह से जानना आवश्यक है, बिना जाने-समझे पूजा करना, मन्त्र जप करना, ठीक उसी प्रकार है जैसे किसी को तैरना नहीं आता हो, और और वह बहती नदी में छलांग लगा दे, ऐसा व्यक्ति तो डूबेगा ही !

दीपावली का सिद्ध मुहूर्त धनत्रयोदशी से प्रारम्भ हो कर दीपावली की रात्रि तक, तीन दिन रहता है, लेकिन इसके अतिरिक्त भी कुछ ऐसे सिद्ध मुहूर्त हैं, जिनका प्रभाव चमत्कार से कम नहीं है, जिन साधकों ने साधनाएं की हैं उनके स्वयं के अनुभव निराले रहे हैं, ये सिद्ध मुहूर्त तो ऐसे मुहूर्त हैं, जैसे रेगिस्तान में, दरिद्रता के जंजाल में भटकते मनुष्य को मीठे जल का स्रोत मिल गया हो।

इस वर्ष ऐसा **'महालक्ष्मी कल्प'** भाद्रपद शुक्ल ६ शनिवार से भाद्रपद शुक्ल अष्टमी सोमवार, अर्थात् दिनांक १४ सितम्बर से १६ सितम्बर तक है, ये मुहूर्त ऐसा मुहूर्त है, जिसकी प्रतीक्षा तो इन्द्रादि देवता भी करते हैं।

"योग वशिष्ठ" **में नीति वाक्य लिखा है, कि सिद्ध मुहूर्त में जो कार्य संभव होता है, वही कार्य बिना मुहूर्त करने में सहस्त्र गुना अधिक परिश्रम लगता है।**

इस मुहूर्त की उतनी ही मान्यता है, जितनी दीपावली के मुहूर्त की, और ऐसा शुभ योग कई वर्षों में आता है, ये तीन दिन केवल साधारण दिनों

की तरह मत बिता देना, इन तीन दिनों में तो लक्ष्मी का आह्वान करना है, पूजन करना है, दिन-प्रतिदिन नया प्रयोग सम्पन्न करना है, इन तीन दिनों की सही साधना एक सुदृढ़, सुसम्पन्न, सुखी, सफल, भविष्य की नींव बनेगी, यदि कोई मूर्ख ये तीन दिन गंवा देता है तो बिल्कुल वैसा ही कार्य करता है, जिसे अपने सामने रास्ते पर चमकता हुआ हीरा पड़ा है, और वह आंख मींच कर अन्धों की तरह निकल जाता है, इन तीन दिनों का एक-एक क्षण कीमती है, और इन तीन दिनों में क्या करना है, क्या नहीं करना है, और किस प्रकार करना है, इसे विस्तार से समझ लेना आवश्यक है।

लक्ष्मी के ध्यान में मूल रूप से ही यही प्रार्थना रहती है, कि मेरे कार्य सिद्ध हों, मैं सही मार्ग पर चलते हुए उन्नति प्राप्त करूं, जिससे मेरे परिवार की सुख-शान्ति में वृद्धि हो।

लक्ष्मी के स्वरूप में शंख, चक्र, गदा, पद्म, मूल रूप से हैं, इसमें प्रत्येक वस्तु का विशेष प्रतीकात्मक महत्व है, शंख शुभता का प्रतीक है, जिससे यह तात्पर्य है कि धन को शुभ एवं मंगल कार्यों में ही प्रयुक्त किया जाना चाहिए, चक्र गति का प्रतीक है, जिस प्रकार चक्र निरन्तर चलता रहता है, उसी प्रकार आय का साधन भी निरन्तर चलते रहना चाहिए, जिसने अपनी गति रोक दी, उसके पास लक्ष्मी का आगमन रुक जाता है, धन को नये-नये कार्यों में लगाते रहना चाहिए, तभी वृद्धि हो सकती है, गदा कर्म का प्रतीक है, जो सही कर्म करेगा, निश्चित मार्ग पर चलेगा, उसे ही लक्ष्मी प्राप्त होती है, कमल सबसे सुन्दर प्रतीक है, कमल कीचड़ से उत्पन्न होता है, लेकिन उस पर एक भी दाग नहीं लगता है, अपनी सुन्दरता बनाये रखता है, इसी प्रकार गृहस्थ को भी संसार में रहते हुए लक्ष्मी की कामना करते हुए, स्वच्छ खिला हुआ रहना चाहिए, न कि अपने आपको जंजाल में डुबो दें, जो माया संसार में रहते हुए, माया का उपार्जन करते हुए भी विरक्त बना रहता है, वही लक्ष्मी का सच्चा उपासक है।

जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया गया है, कि महालक्ष्मी साधना के ये तीन महत्वपूर्ण दिन अलग-अलग प्रयोग सम्पन्न करने में, प्रत्येक दिन विशेष प्रयोग सम्पन्न किया जायेगा, साधक इसी क्रम से चलते हुए पूजा विधान सम्पन्न करें।

प्रथम दिन पूजा विधान

भाद्रपद शुक्ल ६ शनिवार दिनांक १४-९-९१ को प्रारम्भ होने वाला प्रथम दिन लक्ष्मी के आह्वान का, पूजन का दिन है।

साधक प्रातःकाल जल्दी उठ कर स्नान कर अपना नित्य कर्म संध्या इत्यादि जो भी पूजन सम्पन्न करते हैं, वह पूजन अवश्य ही सम्पन्न कर दें, उसके पश्चात् इस विशेष पूजन का आयोजन करें।

लक्ष्मी पूजा में यह आवश्यक है कि सर्वप्रथम गणेश जी की पूजा की जाय, गुरु पूजा सम्पन्न की जाय, और फिर अनुष्ठान सम्पन्न किया जाय, क्रम के अनुसार चलने से ही साधना में अनुकूलता प्राप्त होती है।

प्रतिदिन पूजा में कुछ सामग्री तो काम में आयेगी ही, उस सामग्री की व्यवस्था तीन दिन के हिसाब से कर लेनी चाहिए, ये सामग्री निम्न हैं—

१-जलपात्र, २-गंगाजल, ३-दूध, ४-दही, ५-घी, ६-शहद, ७-शक्कर, ८-पंचामृत, ९-चन्दन, १०-केसर, ११-चावल, १२-पुष्प एवं पुष्प मालाएं, १३-घर में बना हुआ मिष्ठान-द्रव्य, १४-धूप, १५-दीप, १६-मौली, १७-नारियल, १८-सुपारी, १९-फल और २०-दक्षिणा।

विश्वामित्र प्रणीत पद्मावती महालक्ष्मी साधना

ऋषि विश्वामित्र को विद्वानों का भी विद्वान कहा जाता है, और शुद्ध साधनाओं के सम्बन्ध में उनके द्वारा

जो ज्ञान वर्षा की गई, वे अपने आपमें पूर्ण सिद्ध एवं प्रामाणिक हैं, प्रत्येक साधना को ऋषि विश्वामित्र ने स्वयं सम्पन्न कर, उसे परख कर लिपिबद्ध कराया।

पद्मावती साधना महालक्ष्मी की सबसे अपूर्व साधना है, और यह साधना गृहस्थ व्यक्तियों के लिए अमृततुल्य है, व्यक्ति चाहे नौकरी पेशा हो अथवा व्यापारिक, लक्ष्मी से सम्पन्न हो अथवा निर्धन हो, लक्ष्मी को पूर्ण रूप से वश में करने के लिए सबसे सुन्दर यह साधना है।

साधना सामग्री

इस साधना में निम्न सामग्री आवश्यक है और प्रत्येक सामग्री का विशेष प्रयोग है—

१-विश्वामित्र प्रणीत पद्मावती चित्र, २-सियार सिंगी, ३-गोमती चक्र, ४-लघुशंख, ५-मधुरूपेण रुद्राक्ष, ६-त्रिवली हकीक, ७-कल्पवृक्ष वरद, ८-पद्मावती यन्त्र, ९-शत अष्टोत्तरी महालक्ष्मी सपर्या, १०-दुर्लभ विश्वामित्र चैतन्य पद्म, ११-महालक्ष्मी सिद्धि यन्त्र, १२-क्षीरोद्भुत कामधेनु विग्रह।

अपने पूजा स्थान को पूर्ण रूप से स्वच्छ कर दीवार पर सामने स्वास्तिक बनायें, और अपने सामने एक बाजोट बिछा कर उस पर पीला वस्त्र बिछा कर तांबे का कलश जल भर कर स्थापित करें, और कलश का पूजन करें, इसमें थोड़े चावल, सुपारी, दक्षिणा स्वरूप सवा रूपया, पुष्प डाल कर, पांच पीपल के पत्ते रख कर कलश के ऊपर नारियल स्थापित करें, नारियल स्थापित करने से पहले स्वास्तिक बना कर मौली लपेटें तथा गन्ध, अक्षत, पुष्प से पूजन करें, अब एक ओर घी का दीपक जलाएं और अग्नि देव का ध्यान करें।

सर्वप्रथम यदि पूजा स्थान में गुरु चित्र है तो गुरु पूजन कर गुरु का ध्यान करें, और गुरु मन्त्र का जप करें, फिर एक छोटे पात्र में गणपति प्रतिमा स्थापित करें और "गं गणपतयै नमः" मन्त्र का जप करते हुए गणपति पूजन सम्पन्न करें, जिससे सभी कार्य बिना विघ्न सुसम्पन्न हो सकें।

महत्वपूर्ण पूजा

अब अपने सामने एक दूसरे लकड़ी के पट्टे पर पीला वस्त्र बिछा कर बारह केसर की बिन्दियां लगायें, और उन पर चावल की ढेरियां बनावें, फिर प्रत्येक चावल की ढेरी पर एक-एक वस्तु रख दें, उदाहरण के लिए पहली ढेरी पर सियार सिंगी, दूसरी ढेरी पर गोमती चक्र आदि स्थापित कर दें, बारहवीं ढेरी के पास पद्मावती चित्र को स्थापित कर दें।

इसके पश्चात् भगवती महालक्ष्मी पद्मावती का ध्यान करें—

कान्त्या कांचन-सन्निभां हिम-गिरि-प्रख्यैश्चतुर्भिर्गजे-
र्हस्तोत्क्षिप्तहिरण्मयामृत-घटैरासिच्यमानांश्रियम्।
विप्राणां वरमब्ज-युग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलाम्,
क्षौमौबद्धनितम्ब बिम्ब लसितां वन्दे रविन्द-स्थित॥

इसके बाद लकड़ी के पट्टे पर जो साधना के लिए बारह वस्तुएं रखी हैं, उनमें से प्रत्येक का पूजन करें, कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक ढेरी और उस पर रखे हुए पदार्थ का जल, कुंकुम, केसर, अक्षत, पुष्प आदि से पूजन करें, तत्पश्चात् बांएं हाथ में चावल ले कर केसर से रंग कर उन सब पर थोड़े-थोड़े चावल छिड़कते हुए उनकी प्राण प्रतिष्ठा करें।

प्राण प्रतिष्ठा

आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ क्षं सं हंसः आवरण-सहिता महालक्ष्मी प्राणाः इह प्राणाः। आं ह्रीं महालक्ष्मी जीव इह स्थितः। आं ह्रीं महालक्ष्मी सर्वेन्द्रियाणि। आं ह्रीं महालक्ष्मी वांङ् मनश्चक्षु श्रोत्र-त्वक जिह्वा-घ्राण पद प्राण इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठतु स्वाहा॥

इसके बाद उन बारह पदार्थों के सामने, प्रत्येक पदार्थ या ढेरी के सामने दीप प्रज्ज्वलित करें और प्रज्ज्वलित करते समय निम्न प्रकार से उच्चारण करते हुए दीपक स्थापित करें --

१-पद्मावती चित्र -पद्मावत्यै नमः दीपं स्थापयामि ।
१-सियार सिंगी-कालाग्नि रुद्राय नमः दीपं स्थापयामि ।
३-गोमती चक्र हेमपीठाय नमः दीपं स्थापयामि ।
४-लघु शंख-क्षीर सिन्धवे नमः दीपं स्थापयामि ।
५-मधुरूपेण रुद्राक्ष - ज्ञां ज्ञानाय नमः दीपं स्थापयामि ।
६-त्रिवली हकीक-ऐं ऐश्वर्यै नमः दीपं स्थापयामि ।
७-पद्मावती यन्त्र -पं पद्माय नमः दीपं स्थापयामि ।
८-कल्पवृक्ष वरद -कं कल्पवृक्षाय नमः दीपं स्थापयामि ।
९-शतष्टोत्तरी लक्ष्मी सपर्या–मं मणि हर्म्याय नमः - दीपं स्थापयामि ।
१०-विश्वामित्र चैतन्य- विं विद्या तत्वाय नमः दीप - स्थापयामि ।
११-महालक्ष्मी सिद्धि यन्त्र–श्रीं सिद्धलक्ष्म्यै नमः दीपं - स्थापयामि ।
१२-क्षीरोद्भुत कामधेनु विग्रह कं कामधेन्वै नमः दीप स्थापयामि ।

इसके बाद इन सभी बारह दुर्लभ पदार्थों की सामूहिक पूजा करे, सामूहिक पूजा में जल से, गंगाजल से, पंचामृत से, छींटे डालते हुए स्नान करावे और फिर केसर का तिलक करे, तत्पश्चात् उन पर अक्षत चढ़ावे और पुष्प समर्पित करे, इन सभी पदार्थों पर गुलाब का इत्र सम्भव हो तो समर्पित करे, और फिर इनके सामने रखे हुए सभी दीपक प्रज्जवलित कर दें, और सभी के सामने अलग-अलग अगरबत्ती लगावें, इसके बाद पद्मावती चित्र पर पुष्प का हार चढ़ावें और हाथ जोड़ कर निम्न प्रार्थना करें —

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जूं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृत स्रावय स्रावय स्वाहा ।।

अब अपने दोनों हाथों में पुष्प भर कर देवी को अर्पित करें, और इस भावना के साथ अर्पित करें, कि "हे महालक्ष्मी ! मैं अपने जीवन को अमृत स्वरूप बनाने हेतु आपकी आराधना कर रहा हूं, मेरी समस्त कामनाएं पूर्ण करें", फिर देवी चित्र के आगे गन्ध, कुंकुम, अष्टगन्ध, अर्पित करें, नैवेद्य चढ़ाएं तथा निम्न बीज मन्त्र की ग्यारह माला **"कमल गट्टे की माला** से मन्त्र जप करें—

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ह्रीं क्लीं क्लीं नानोपलक्ष्मी श्री
पद्मावती आगच्छ आगच्छ नमः ।।

मन्त्र जप के पश्चात् कपूर से समस्त देवताओं और भगवती लक्ष्मी की आरती करें, और आरती के ऊपर हाथ घुमा कर पूरे शरीर को स्पर्श करें, आरती के पश्चात् नैवेद्य परिवार के सभी सदस्यों कों बांट कर स्वयं ग्रहण करें ।

सम्पूर्ण पूजन के पश्चात् सामग्री अपने पूजा स्थान में उसी पीले कपड़े में पोटली बांध कर रख दें ।

यह साधना जीवन में धन, यश, मान, पद, प्रतिष्ठा, और ऐश्वर्य अभिवृद्धि की साधना है, जीवन की कमियों को पूरा करने की साधना है, विश्वामित्र ने साधना के प्रारम्भ में लिखा है कि "चाहे भगवान शिव का त्रिशूल निरस्त हो जाय, चाहे विष्णु का सुदर्शन चक्र निस्तेज हो जाय, और चाहे ब्रह्मा का ब्रह्मास्त्र असफल हो जाय, पर यह साधना और इसका फल व्यर्थ नहीं होता ।"

द्वितीय दिवस

जहां पहला दिवस लक्ष्मी की मूल साधना, पद्मावती साधना सुसम्पन्न करने का है, वहीं दूसरे दिन दो छोटे-छोटे प्रयोग सम्पन्न करने भी आवश्यक हैं ।

१-ऋण मोचन लक्ष्मी प्रयोग

दूसरे दिन प्रातः जल्दी उठ कर इस प्रयोग को सम्पन्न करना है, मुहूर्त की दृष्टि से प्रातः ५ बजकर ४८ मिनट से ६ बजकर ४१ मिनट का समय विशेष महत्वपूर्ण है।

सामग्री

ऋण मोचन लक्ष्मी तन्त्र फल (मन्त्र-सिद्ध), जल पात्र, अगरबत्ती, घी का दीपक।

मन्त्र

।। ॐ नमो ह्रीं श्रीं क्रीं श्रीं क्लीं क्लीं श्री लक्ष्मीममगृहे धनं चिंता दूर करोति स्वाहा ।।

विधि

सर्व प्रथम साधक पूर्व की ओर मुंह करके बैठ जाय, सामने किसी पात्र में मन्त्र सिद्ध **'ऋण मोचन तन्त्रफल'** रख दें, और उस पर केसर से अपना नाम लिख दें, फिर उपरोक्त मन्त्र की पांच मालाएं फेरें इसके लिए **'मूंगे'** की अथवा **'स्फटिक'** की माला का प्रयोग किया जा सकता है।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तब प्रयोगकर्त्ता स्वयं उस ऋण मोचन लक्ष्मी तन्त्रफल को दक्षिणा के साथ किसी गरीब या भिखारी को दे दें, कहा जाता है कि ऐसा करने से उस तन्त्रफल के साथ ही साथ ऋण बाधा तथा दरिद्रता भी दान में चली जाती है, और उसके घर में भविष्य में किसी प्रकार की दरिद्रता का वास नहीं रहता।

यदि भिखारी नहीं मिले तो प्रयोगकर्त्ता स्वयं किसी मन्दिर में जा कर दक्षिणा के साथ उस तन्त्रफल को भेंट कर दें।
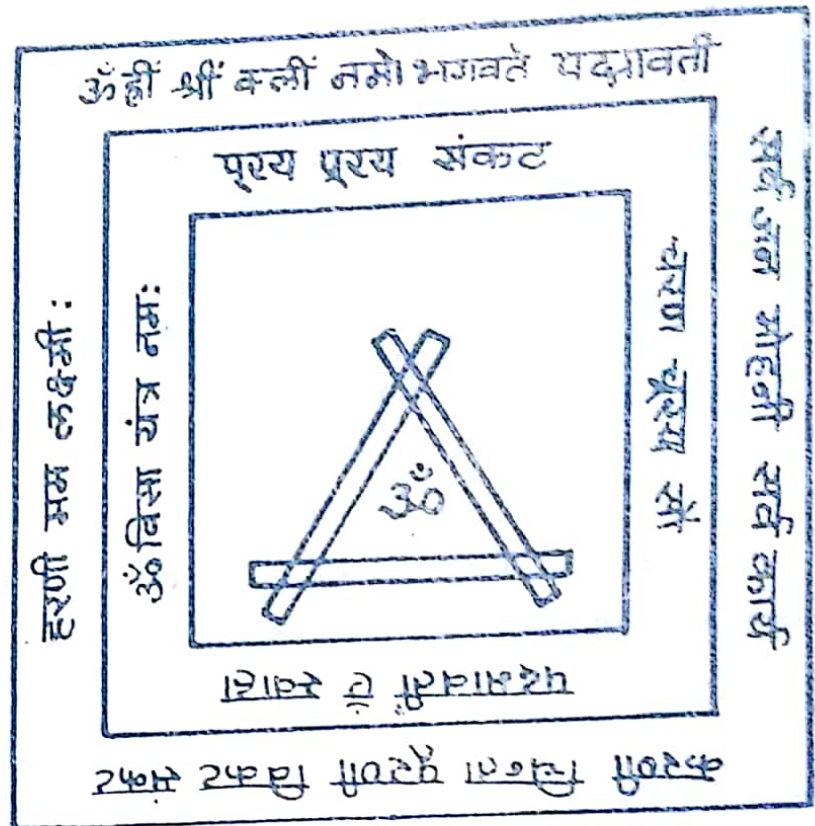
इस प्रकार करने से उसके जीवन में यदि कोई ग्रह बाधा या अन्य किसी प्रकार की कोई अशुभ बाधा योग होता है, तो वह समाप्त हो जाता है, उसके घर से दरिद्रता हमेशा-हमेशा के लिए समाप्त हो जाती है।

यह प्रयोग प्रातःकाल ही सम्पन्न करना है, इसका विशेष ध्यान रखें, प्रयोग के पश्चात् लक्ष्मी की आरती अवश्य सम्पन्न करें।

व्यापार वृद्धि एवं कार्य सिद्धि प्रयोग

लक्ष्मी का मूल आधार ही गति है, जहां वृद्धि नहीं, वहां लक्ष्मी का क्षय होने लग जाता है, इसीलिए एक बार धन उपार्जन करने के पश्चात् भी व्यक्ति को शान्त हो कर नहीं बैठ जाना चाहिए, कई बार कार्य में असफलताएं एक के बाद एक आती रहती है और उन्नति रुक जाती है।

महालक्ष्मी कल्प के दूसरे दिन सायंकाल को ९ बजे के बाद यह विशेष **'व्यापार वृद्धि एवं कार्य सिद्धि प्रयोग'** करने से साधक का भाग्य चाहे कितना ही रूठा हुआ क्यों न हो, उसे भाग्योदय अवश्य प्राप्त होता है।

सामग्री

जलपात्र, अगरबत्ती, घी का दीपक, **भाग्योदय यन्त्र शंखमाला** केसर।

मन्त्र

॥ ॐ ह्रीं धनधान्य समृद्धि दारिद्रय विनाशिनी महा-लक्ष्मी मम गृहे आगच्छ आगच्छ ह्रीं ह्रीं ॐ नमः ॥

विधि

साधक या प्रयोगकर्त्ता आसन बिछा कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय, सामने पात्र में **भाग्योदय यन्त्र** रख दें, पहले उसे जल से धो लें, फिर पौंछ कर उस पर केसर का तिलक करें, और सामने स्थापित कर उसके सामने दूध का बना प्रसाद रखें, और अगरबत्ती तथा घी का दीपक प्रज्जवलित करें, फिर **शंखमाला** से उपरोक्त मन्त्र की पांच मालाएं फेरें।

इसके बाद प्रातःकाल होने पर इस यन्त्र को अपने घर के पूजा स्थान में, दुकान पर अथवा फैक्ट्री में स्थापित कर दें।

ऐसा करने पर उसके व्यापार में निरन्तर उन्नति होती रहती है, और जब तक वह यन्त्र दुकान में, कार्यालय या फैक्ट्री में, अथवा घर में स्थापित रहेगा, तब तक उसे निरन्तर सफलता प्राप्त होती रहेगी।

यह प्रयोग आजमाया हुआ है, और इस प्रयोग से सैकड़ों लोगों ने आश्चर्यजनक लाभ उठाया है।

तृतीय दिवस—धनाध्यक्ष कुबेर प्रयोग

महालक्ष्मी कल्पवास का यह तीसरा दिवस अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करने, लक्ष्मी का अक्षय भंडार बनाने हेतु, लक्ष्मी के प्रिय तथा देव कोषाध्यक्ष कुबेर की साधना करने का है, इस दिन जो कुबेर साधना विधि सहित सम्पन्न करता है, उस पर कुबेर की धन रूपी अमृत वर्षा निरन्तर होती रहती है ।

इस विशेष मुहूर्त में तो कुबेर मन्त्र की ग्यारह माला जप करने से ही मन्त्र सिद्ध हो जाता है, इसमें साधक प्रातः जल्दी उठ कर स्नान कर, शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर पूर्व की ओर मुंह कर बैठे, अपने सामने मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **कुबेर यन्त्र** स्थापित करें, तत्पश्चात् एक घी का दीपक और अगरबत्ती लगाएं, यन्त्र की पूजा इस लेख के प्रारम्भ में दी गई सामग्री से करें, और गुड़ का नैवेद्य चढ़ाएं, तत्पश्चात् **कमल गट्टे की माला** से कुबेर मन्त्र का पांच अथवा ग्यारह माला मन्त्र जप करें ।

मन्त्र

।। ॐ यक्षाय कुवेराय वैश्रवणाय धन धान्यादि पतये धन धान्य समृद्धि मे देहि दापय स्वाहा ।।

अब मन्त्र जप के पश्चात् लक्ष्मी आरती सम्पन्न कर यन्त्र के सामने चढ़ाया हुआ नैवेद्य ग्रहण करें, यन्त्र को उसी स्थान पर स्थापित रखें ।

लक्ष्मी साबर प्रयोग

लक्ष्मी साधना के इस अनूठे कल्पवास का समापन साधक साबर मन्त्र प्रयोग से सम्पन्न करे, तो उसके लिए हर दृष्टि से उचित रहता है, इस विशेष साबर मन्त्र का प्रयोग साधक कभी भी कर सकता है, कैसा भी संकट आ पड़े, साबर मन्त्र बाण की तरह कार्य करता है ।

रात्रि को प्रथम पहर के पश्चात् लाल वस्त्र धारण कर अपने मस्तक पर कुंकुम से तिलक लगायें, और सामने एक **मोती शंख** स्थापित कर उसे भी कुंकुम से रंग दें, तेल का दीपक जलाएं और इस मन्त्र की एक माला का जप करे ।

मन्त्र

।। ॐ नमो पद्मावती पद्मतनये लक्ष्मी दायिनी वांछा भूत प्रेत विन्ध्यवासिनी सर्व शत्रु संहारिणी दुर्जन मोहिनी ऋद्धि सिद्धि वृद्धि कुरु कुरु स्वाहा ॐ क्लीं श्रीं पद्मावत्यै नमः ।।

यदि पूजा स्थान में कोई हलचल हो तो चिन्ता नहीं करें, मन्त्र जप करते रहें ।

तीन दिन का यह महानुष्ठान, महालक्ष्मी कल्प पूरा होने का उद्यापन, गुरु मन्त्र का जप, पूजन, गुरु आरती तथा गुरु से मानसिक आशीर्वाद प्राप्त कर सम्पन्न करने का है ।

इन तीन दिनों में जो साधक अपने आपको गुरु के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित करते हुए विधि विधान सहित यह सारा कल्प प्रयोग सम्पन्न कर देता है, तो उसका जीवन ऐसा हो जाता है, मानो वह साक्षात् कल्प वृक्ष के नीचे बैठा है, और उसकी इच्छाएं अपने आप पूर्ण हो रही हैं ।

गुरु बिन ज्ञान कहां से पाऊं

शिष्य द्वारा गुरु पूजन, गुरु साधना, गुरु भक्ति की तांत्रिक साधना

जितना महत्वपूर्ण गुरु शब्द है, गुरु तत्व है, उतना ही महत्वपूर्ण शिष्य बनना भी है, शिष्य बनना, और बन कर उसे निभाना ठीक उसी प्रकार है, जैसे ऊफनती धारा में अपने आपको गुरु के भरोसे छोड़ देना, गुरु अर्चना किस प्रकार की जाय और गुरु भक्ति से कुण्डलिनी कैसे जागृत हो, एवं विशेष योग "पातजंली योग" सूत्र से।

श्री सद्गुरु के सम्बन्ध में हजारों ग्रन्थ, हजारों व्याख्याएं दी गई हैं, कि गुरु तत्व क्या है, किस समय दीक्षा लेनी चाहिए, दीक्षा का स्वरूप क्या होना चाहिए, गुरु भक्ति का सार क्या है, लेकिन बहुत कम ग्रन्थों में किस प्रकार गुरु पूजन, गुरु भक्ति की जाय, का विवेचन आया है, गुरु भक्ति शिष्य के लिए प्रथम आधार है. जहां उस एक ठोस सहारा, आत्म विश्वास प्राप्त होता है, इस सहारे को प्राप्त करने के पश्चात् उसे किसी अन्य की ओर देखने की आवश्यकता ही नहीं है, इस प्रकार गुरु भक्ति को, गुरु श्रद्धा को किसी भी तराजू में न तो तोला जा सकता है, और न ही मापा जा सकता है, क्योंकि इसका आधार पूर्ण समर्पण है।

गुरु तुम ही तुम

शिष्य अपनी प्रारम्भिक अवस्था में आशा-निराशा, शंका-कुशंका, चिन्ता-अचिन्ता, में डूबा गुरु के पास पहुंच जाता है, उस समय एक विशेष प्रक्रिया सम्पन्न होती है, यदि आत्मा से तत्काल यह भाव उठे, कि यही मेरे गुरुदेव हैं, तो समझ लो कि सब कुछ मिल गया, यह चुनाव शिष्य को केवल एक बार करना है, और उसके पश्चात् तो नैया की पतवार सद्गुरुदेव के पास सौंप देनी है, फिर नहीं सोचना है कि क्या होगा, और क्या नहीं होगा, मन की सारी शंकाएं बाहर निकाल कर केवल एक समर्पण भाव को ही मन के भीतर स्थापित कर लेना आवश्यक है।

यह स्थिति शिष्य की द्वितीय स्थिति है, क्योंकि शिष्य को तो वह मार्ग खोजना है जिससे वह अपने आपको पूर्ण रूप से पहिचान सके, अपने भीतर जो तत्व छिपा है, उसे उजागर कर सके, अपने भीतर प्रसन्नता का संचार प्रारम्भ कर सके, यदि शरीर में कोई फोड़ा या नासूर हो जाय, तो आप हाथ लगाने से ही डरते हैं, और डाक्टर को तो उसे चीरा लगाने की अनुमति दे देते हैं, और वह नासूर, वह फोड़ा ठीक भी हो जाता है, इसी प्रकार जीवन में यदि चिन्ता रूपी, कष्ट रूपी, दुःख रूपी, भय रूपी, नासूर हो गया है, तो चुपचाप अपने आपको श्री सद्गुरुदेव के प्रति समर्पित कर दो, अब आपकी जिम्मेवारी समाप्त हो जाती है, अब इस चिन्ता रूपी नासूर को चीरा लगाना है, अथवा कौन सी औषधि देनी है, इस पर विचार करना सद्गुरुदेव का काम है, सद्गुरुदेव को तो यह भी देखना है, कि यह विकार भीतर तक से समाप्त हो जाय, जिससे फिर कोई नया नासूर न बन पड़े।

काहि विधि करूं साधना

गुरु पूजन के सम्बन्ध में इतने अधिक प्रयोग अलग-अलग पुस्तकों में दिये गये हैं, कि साधक भ्रमित हो जाता है, कि वास्तविक रूप से किस प्रकार वह नियमित गुरु पूजन करे ? जिससे उसकी गुरु भक्ति साकार हो सके।

इस सम्बन्ध में पूज्य गुरुदेव ने जो विधि बताई और जिस विधि से वे स्वयं नित्य प्रति दादा गुरु श्री सच्चिदानन्द जी महाराज की पूजा करते हैं, वह विधि पहली बार पत्रिका के माध्यम से पूज्य गुरुदेव के शिष्यों के हेतु स्पष्ट की जा रही है, इसके प्रत्येक शब्द को समझें और शुद्ध रीति से आचरण करें।

गुरु तत्व साधना कब ?

गुरु साधना करने का समय विशेष निश्चित नहीं है, यह तो नित्य-प्रति की पूजा साधना है, जिस प्रकार व्यक्ति नित्य प्रति भोजन करता है, उसी प्रकार इसे भी अपने जीवन की दिनचर्या का अंग बना लें, तभी उसे सार्थक गुरु भक्ति कहा जा सकता है।

गुरुवार का दिन गुरु तत्व साधना का प्रारम्भ करने का सबसे उत्तम दिन है, इसमें न तो विशेष आडम्बर चाहिए, न ही कोई लम्बा चौड़ा विधान, एक बात अवश्य है, कि अपने पूजा स्थान में एक स्थान ऐसा अवश्य बना लें, जिसमें गुरु पूजन से सम्बन्धित आवश्यक सामग्री हो, गुरु चित्र हो, और नियमित रूप से उसी स्थान पर बैठ कर ध्यान एवं पूजा करें, ऐसा नहीं हो कि बेड रूम में बैठे हैं, तो बेड रूम में गुरु पूजन कर लिया और ड्राईंग रूम में बैठे हैं, तो वहां गुरु पूजन कर लिया ! एक निश्चित स्थान अवश्य बना लें।

गुरु ही शिव है शिव ही गुरु है

गुरुवार के दिन प्रातः ब्रह्म मुहूर्त में साधक उठ कर स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण करें, अच्छी बातों का ध्यान कर, मन में प्रसन्नता के साथ पूजन प्रारम्भ करें, आलस्य, निद्रा, चित्त में बिल्कुल नहीं होनी चाहिए, ऐसा भाव होना चाहिए कि मानो एक दिव्य ज्योति को अपने भीतर समाहित कर रहे हैं, एक नवीन जीवन निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ कर रहे हैं, जो साधक अपने आपको भुला कर साधना में संलग्न होते हैं, उन्हें ही परम गुरु तत्व

पूर्ण रूप से प्राप्त होता है, जीवात्मा, परमशिव और कुण्डलिनी का संयोग ही परमशिव रूप गुरुदेव है, इन तीनों में कोई भेद नहीं है।

आपने सामने नेत्रों से अमृत बरसाते हुए, प्रसन्न भाव वाले सद्गुरुदेव के चित्र को स्थापित करें, पूजा स्थान में शुद्ध घी का दीपक जलाएं, गुरु चित्र पर चन्दन तिलक लगायें, पुष्प माला चढ़ाएं, इसके पश्चात् अपने सामने ऐसे स्थान पर **गुरु तत्व यन्त्र** स्थापित करें जिसे बार-बार हटाना नहीं पड़े, और इस गुरु यन्त्र का पूजन करें।

सद्गुरुदेव ध्यान

स्वमूर्द्धनि सहस्रारपकंजासीनमव्ययम्। शुद्धस्फटिसंकाशं शरच्चन्द्रनिभाननम्॥
प्रफुल्लेन्दीवराकार नेत्रद्वयविराजितम्। शुक्लाम्बरधरं शुक्लगन्धमाल्यानुलेपनम्॥
विभूषितं श्वेतमाल्यैर्वराभयकरद्वयम्। वामागंगतया शक्त्या सहितं स्वप्रकाशया॥
सुरलोत्पलधारिण्या ज्ञानैर्मुदितमानसम्। शिवेनैक्यं समुन्नीय ध्यायेत् परगुरुं धिया॥

"हे परम पूज्य गुरुदेव! अपने मस्तक के मध्य सहस्रदल कमल में जागृत कुण्डलिनी में स्थित अविनाशी, स्वच्छ स्फटिक मणि के समान कांति वाले, शरदकालीन चन्द्रमा के समान मुख वाले, विकसित कमल के समान सुन्दर नेत्र वाले, श्वेत गन्ध और श्वेत पुष्प की माला धारण करने वाले, श्वेत चन्दन धारण करने वाले, अपने दोनों हाथों में वर और अभय मुद्रा धारण करने वाले, अपने स्वतेज, स्वशक्ति से प्रकाशित, प्रसन्न चित्त वाले, सदाशिव स्वरूप मेरे आराध्य पूज्य गुरुदेव! मैं शिष्य आपका ध्यान करता हूं।"

जब शिष्य गुरुदेव का ध्यान करता है, तो उसे अपने नेत्र बन्द कर प्राणायाम की मुद्रा अपनानी चाहिए, पालथी मार कर सीधा बैठे और अपने कुण्डलिनी तत्व को जागृत करने का ध्यान करें, इस ध्यान मुद्रा में, गुरु ध्यान में एक लहर उठती है, और इस लहर का प्रवाह मूलाधार चक्र, स्वाधिष्ठान चक्र, मणिपुर चक्र, अनाहत चक्र, विशुद्ध चक्र, आज्ञा चक्र से होता हुआ सहस्रार तक पहुंचता है, इस लहर का प्रवाह जिस रूप में भी होता है, होने दें, सहस्रार ही पूज्य गुरुदेव का स्थान है।

अब अपने सामने स्थापित **'सहस्रार-मन्त्रों से अभिमन्त्रित, परम शिव तत्व से शोभित गुरु तत्व यन्त्र'** की पूजा प्रारम्भ करनी चाहिए, इस पूजा में गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, अक्षत के अतिरिक्त **छः सिद्ध तत्व चक्र** चक्र आवश्यक हैं।

पूजा क्रम

॥ लं पृथ्वीतत्वात्मकं गन्धं गुरुवे समर्पयामि नमः॥

दोनों हाथों की कनिष्ठिका और अंगुष्ठ की संयोगात्मक मुद्रा से गन्ध अर्पण करनी चाहिये।

॥ हं आकाशतत्वात्मकं पुष्पं गुरुवे समर्पयामि नमः॥

दोनों हाथों के अंगुष्ठ और तर्जनी की संयोगात्मक मुद्रा से गन्ध अर्पण करना चाहिये।

॥ यं वायुतत्वात्मकं धूपं गुरुवे समर्पयामि नमः ॥

दोनों हाथों के तर्जनी और अंगुष्ठ की संयोगात्मक मुद्रा से धूप अर्पण करना चाहिये ।

॥ रं वह्नितत्वात्मकं दीपं गुरुवे समर्पयामि नमः ॥

दोनों हाथों के मध्यमा और अंगुष्ठ की संयोगात्मक मुद्रा से दीप अर्पण करना चाहिये ।

॥ वं अमृततत्वात्मकं नैवेद्यं गुरुवे समर्पयामि नमः ।

दोनों हाथों के अनामिका और अंगुष्ठ की संयोगात्मक मुद्रा से नैवेद्य अर्पण करना चाहिये ।

अब अपने कुण्डलिनी के एक-एक चक्र का ध्यान करते हुए सांस ऊपर खींचें और एक-एक कर छः सिद्धितत्व चक्र, जो सामग्री में हैं, उन्हें गुरु यन्त्र के सामने रखते रहें ।

अब प्राणायाम प्रक्रिया से गुरु पूजन प्रारम्भ होता है, अपनी दक्षिणानामिका से बांई तरफ का नासापुट दबा कर दक्षिण नासापुट से सोलह बार 'ॐ' मन्त्र का जप करते हुए गुरुदेव का ध्यान करें और श्वास ऊपर खींचे, ध्यान करें कि इस स्थिति में पूज्य गुरुदेव शिव स्वरूप में नाभि में स्थित हैं, फिर दायें अंगूठे से दायें नासापुट को दवा कर चौंसठ बार 'ॐ' मन्त्र का जप करते हुए हृदय में स्थित गुरुदेव का ध्यान करते हुए प्राणायाम करें ।

फिर बांये नासापुट पर दक्षिण अनामिका को रखें और ३२ बार 'ॐ' मन्त्र का जप करते हुए मस्तक में स्थित गुरुदेव का ध्यान करते हुए सांस छोड़ें ।

इस विशेष गुरु पूजन साधना में "सर्वसिद्धि स्वरूपिणि-गुरु रहस्य माला" आवश्यक है, अपने सामने गुरु रहस्य माला रखें और अक्षत, कुंकुम, चन्दन से इस माला का पूजन करें ।

मन्त्र

क्लीं माले माले महामाले सर्वसिद्धिस्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयि नयस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॐ कामेश्वर्यै नमः ॥

अब इस माला से गुरु मन्त्र १०८ बार अथवा १००८ बार जप करें, साधक इस बात का ध्यान रखें कि दीक्षा के समय गुरुदेव के श्रीमुख से जो गुरु मन्त्र दिया गया है, उसी मन्त्र का जप करें, तथा अन्य साधक गुरु मन्त्र —"ॐ नारायणाय गुरुभ्यो नमः" जप करें, इसके पश्चात् माला को प्रणाम कर निम्न मन्त्र का उच्चारण कर अपने मस्तक पर रखें—

॥ ॐ त्वं माले सर्वदेवानां पूजिता शुभदा मता शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च देहि मे ॥

(शेष भाग पृष्ठ संख्या २४ पर देखें)

जहां कर्म है, वहीं सिद्धि है

'कर्म सिद्धि' भी भाग्य का दूसरा स्वरूप है

कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा

कर्म और भाग्य का संयोग ही साधक और शिष्य को जीवन में पूर्णता प्रदान करता है, ये दोनों पक्ष तराजू के दो पलड़ों की भांति हैं, और दोनों के सन्तुलन बिना जीवन डांवाडोल हो जाता है।

पूज्य गुरुदेव यह मानसी दीक्षा प्रदान करेंगे, अपने प्रत्येक समर्पित शिष्य, साधक, गृहस्थ और सन्यासी को।

यह शुभ कार्य आप अपने घर में भी बैठ कर सम्पन्न कर सकते हैं, और इसे सम्पन्न किये बिना दीक्षा क्रम की पूर्णता भी नहीं है।

कर्म सिद्धि वर्चस्व मानसी दिवस

(१७ सितम्बर १९९१)

कर्म और जीवन

- कर्म के भी दो भेद हैं, प्रथम तो ईश्वर प्रदत्त है, जैसे शरीर में रक्त प्रवाह, हृदय धड़कना, इन्द्रियों का ज्ञान।
- दूसरा स्वप्रयास से किया गया कर्म, जैसे चलना, खाना, पीना, दिनचर्या-निर्धारण।
- स्वप्रयास के बिना व्यक्ति का जीवन, जीवन नहीं है, अपने जीवन को विशेष बनाने के लिए प्रयास करना ही पड़ेगा, और यही वास्तविक कर्म भी है।
- भाग्य प्रबल हो लेकिन कर्म हीन हो, तो भाग्य से प्राप्त लाभ भी नष्ट हो जाता है, स्थायी नहीं रहता।

- कर्म ही व्यक्ति को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है, उसके जीवन में उन्नति के नये द्वार खोलता है, और यदि भाग्य भी साथ दे, तो जीवन ऐसा हो जाता है जैसे कर्म रूपी मुद्रिका पर भाग्य रूपी हीरे जड़े हों।
- दुर्भाग्य को सौभाग्य में कर्म से ही बदला जा सकता है, केवल दुर्भाग्य का रोना-रोने से कोई पूर्ति नहीं होती।

कर्म सिद्धि

★ व्यक्ति प्रथम तो इच्छा करता है, और फिर उस पर अपनी बल-बुद्धि से कार्य करता है, और वही व्यक्ति जीवन में सफल हो सकता है।

★ केवल इच्छाएं करना स्वप्न में किले बनाने के समान है, कि नींद टूटी और सब कुछ समाप्त।

★ कर्म सिद्धि भी प्रत्येक को प्राप्त नहीं होती, ऐसे एक दो नहीं हजारों उदाहरण आप लोगों के सामने होंगे, कि अपनी पूरी बुद्धि लगा रहे हैं, परिश्रम कर रहे हैं, लेकिन परिश्रम का फल प्राप्त नहीं होता।

★ कर्म सिद्धि भी गुरु कृपा, आशीर्वाद, शुभ कार्य, श्रेष्ठ विचारों से ही प्राप्त होती है।

★ गुरु कृपा से तो दुर्भाग्य का घटाटोप अन्धकार भी दूर हो सकता है, और उसमें शुभ्र, श्वेत, दिव्य प्रकाश आ सकता है, जो जीवन का स्वरूप ही बदल देता है।

★ **कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा**—गुरु द्वारा अपने प्रत्येक शिष्य को सही समय पर प्रदान की जाती है।

★ **कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा**—प्राप्त कर शिष्य जो भी कर्म अपने पूरे प्रयत्नों से सम्पन्न करता है, उसमें सफलता मिलती ही है।

★ **कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा**—प्राप्त किये बिना जीवन में अन्धी राह पर चलना ही है, जिसमें कुछ भी स्पष्ट नहीं है।

★ **कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा**—प्राप्त शिष्य को यह ज्ञान रहता है, कि मैं यह कर्म एक निश्चित उद्देश्य हेतु कर रहा हूं, और मुझे इसमें सफलता मिलेगी ही, और उसका यह विश्वास हर बार पूर्ण होता ही है।

१७ सितम्बर १९९१ कर्म सिद्धि वर्चस्व दिवस है और इस दिन पूज्य गुरुदेव अपने प्रत्येक शिष्य को यह महामति, महामाया, सिद्धिकारक, मानसी दीक्षा प्रदान करेंगे, पूरे भारतवर्ष में बैठे अपने शिष्यों को।

आपको क्या करना है ?

- कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा गुरु कृपा से, गुरु आशीर्वाद से सम्पन्न होती है, और इसी से भाग्योदय सम्पन्न होता है।

- कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा का समय दिनांक १७-६-६१ को प्रात: ५ बज कर ५८ मिनट से १० बज कर १६ मिनट तक ही है, इसके अतिरिक्त यदि कोई शिष्य यह महत्वपूर्ण दीक्षा लेना चाहता है, तो इसे पूज्य गुरुदेव के समक्ष उपस्थित हो कर भी प्राप्त कर सकता है।
- इस दिन पूज्य गुरुदेव अपने सभी शिष्यों को यह मानसी दीक्षा प्रदान करेंगे, आप जैसे प्रत्येक शिष्य को अपने घर बैठे पूज्य गुरुदेव के निर्देशानुसार कार्यक्रम सम्पन्न करना है।
- यदि आप दीक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो यह अंक प्राप्त होते ही, पूज्य गुरुदेव के नाम व्यक्तिगत पत्र लिख दें, कि 'मैं आपका शिष्य यह **'कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा'** प्राप्त करना चाहता हूं'।
- इस साधना हेतु आवश्यक सामग्री जिसमें सात सामग्री सम्मिलित हैं, की व्यवस्था यहीं से की जायेगी।
- प्रातः स्नान कर, शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण कर शान्त मुद्रा में बैठ जांय, और गुरु मन्त्र का जप प्रारम्भ कर दें, प्रत्येक गुरु मन्त्र की माला के जप के साथ ही सात सामग्री में से एक सामग्री सामने रखे गुरु चित्र अथवा गुरु यन्त्र के सामने अर्पित कर दें, इस प्रकार सात माला मन्त्र जप सम्पन्न करना है।
- तत्पश्चात् शान्त मन से अपने दोनों हाथ जोड़ कर निम्न मन्त्र से गुरु नमस्कार सम्पन्न करें।

नमो नमो निरंजन नमस्कार गुरुदेवतः।
वन्दनं सर्वं साधना परनामं परांगतम् ।।

- उसके पश्चात् हाथ में जल लेकर निम्न संकल्प करें—

"सर्व कर्मा सर्व काम सर्व गन्ध सर्व रस सर्व मिदम सर्व सिद्धि
ऐस मम आत्मा अन्तर हृदय प्रत्याभि संभविता नमो गुरुदेव।"

- यह संकल्प कर्म सिद्धि का सर्वोत्तम स्वरूप है, इस मन्त्र का जप कर शान्त भाव से बैठ जांय और 'ऐं' बीज मन्त्र बिना माला के जप करते रहें, शरीर को बिलकुल ढीला छोड़ दें, और पूज्य गुरुदेव द्वारा प्रवाहित तरंगों को अपने भीतर समाहित होने दें।

आपके लिए आवश्यक

- ★ पूज्य गुरुदेव अपने सभी साधकों, शिष्यों को यह महत्वपूर्ण दीक्षा प्रदान करेंगे, तो आपका भी कर्त्तव्य हो जाता है, कि आप कुछ करें।
- ★ आपको अपनी पत्रिका के लिए दो सदस्य बनाना है, और आप इस दीक्षा हेतु पत्र लिखते समय जिन मित्रों अथवा स्वजनों को सदस्य बनाना है, उसका नाम व पूरा पता भी लिख भेजें।
- ★ कार्यालय द्वारा आपको २१०)रु० की वी०पी० से कर्म सिद्धि वर्चस्व दीक्षा पैकेट भेज दिया जायेगा, वी०पी० छूटते ही आपके दो मित्रों अथवा स्वजनों को वर्ष ६१ का पत्रिका सदस्य बना

कर उन्हें पूरे वर्ष नियमित रूप से पत्रिका भेजते रहेंगे, और इस प्रकार आप सर्वथा मुफ्त में ही यह महत्वपूर्ण दीक्षा उपहार स्वरूप पूज्य गुरुदेव से प्राप्त कर सकेंगे।

* निश्चित दिवस १७ सितम्बर ६१ को प्रातः ऊपर दी गई विधि के अनुसार पूजन कर कर्म सिद्धि दीक्षा यन्त्र धारण कर लें।

* इस दीक्षा को प्राप्त करने वाला सौभाग्यशाली शिष्य अपने जीवन में उसी क्षण से एक परिवर्तन होता अनुभव करेगा, उसके कर्म और उसके भाग्य का संयोग शुद्ध रूप में, श्रेष्ठ रूप में होकर पूर्ण फल प्रदान करेगा।

आपके लिए दिव्य अवसर

जिसे हर हालत में सम्पन्न करना ही है

(पृष्ठ संख्या २० का शेष भाग)

इसके पश्चात् हाथ में जल लें, और यह संकल्प करते हुए, कि मैंने जो मन्त्र का जप किया है वह श्री गुरुदेव को समर्पित है, जल भूमि पर छोड़ दें।

गुरु पूजन का प्रधान स्वरूप समर्पण में है, ध्यान में है, इस पूजा का समापन भी गुरुदेव के ध्यान से होता है, गुरुदेव को नमस्कार करते हुए निम्न तीन मन्त्रों का, ग्यारह बार शान्त भाव से बोल कर उच्चारण करें—

अखण्डमण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम् तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानांजनशलाकया चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्री गुरुवे नमः।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः।

"जो दृश्यमान है और अदृश्य है, वह सब गुरु स्वरूप ही है, व गुरु ही साक्षात् ब्रह्मा, विष्णु, महेश तथा परब्रह्म है।"—ऐसा ध्यान करते हुए गुरुदेव को प्रणाम करें, और अपनी दिनचर्या प्रारम्भ करें।

जो साधक इस पूजन को नियमित रूप से सम्पन्न कर सकते हैं, वे ही शुद्ध सम्पूर्ण शिष्य है, प्रति गुरुवार को व प्रत्येक महत्वपूर्ण अवसर पर यह पूजन अवश्य सम्पन्न करें।

"सर्व सिद्धि स्वरूपिणि गुरु रहस्य माला" अपने पूजा स्थान में ही रखें, प्रतिदिन घर से बाहर निकलते समय गुरु ध्यान कर इस माला को अपने नेत्रों और मस्तक से अवश्य स्पर्श करायें।

जिस शिष्य ने अपना सब कुछ, अपना भाव सद्गुरुदेव को सौंप दिया, उसे तो किसी प्रकार की चिन्ता करने की आवश्यकता ही नहीं है।

सर्वांग सुन्दरी

कामदा मनोहारी यक्षिणी

जो

अर्धरात्रि समय छम-छम करती आती है

और

साधक को सब कुछ प्रदान कर देती है

वीर भाव से की जाने वाली विशेष साधना जिसमें वट यक्षिणी जो १६ शक्तियों से युक्त है, सिद्ध होने पर साधक के जीवन में आनन्द ही आनन्द की वर्षा कर देती है, आश्चर्यजनक, अद्भुत .....।

परम पुरुष तो भगवान श्री नारायण ही हैं, और सारी सृष्टि उनका ही अंश है, यदि कोई व्यक्ति यह कहे, कि मैं पुरुष हूं तो यहां तक तो ठीक है, लेकिन परम पुरुष बनना तो सम्भव नहीं है, यह परम तत्व तो व्यक्ति को साधना के माध्यम से ही प्राप्त हो सकता है, जीवन में पूर्णता की ओर अग्रसर होना ही पुरुष का कर्त्तव्य है, और जो इस कर्त्तव्य को नहीं निभाते, उन्हें समय भुला देता है, ऐसे व्यक्ति जन्म लेते हैं, कीड़े-मकोड़ों की भांति जीते हुए जीवन यात्रा को पूरा कर देते हैं, इसमें विशेष बात ही क्या है? यह तो समय काटने वाली बात है, जो जीवन में मिला है उसका सदुपयोग नहीं है बल्कि ईश्वर द्वारा प्रदत्त, प्रकृति द्वारा सजाई-संवारी गई इस देह का अपमान है।

आखिर पूर्णता क्या है?

साधक और शिष्य कई बार पूज्य गुरुदेव से बड़े ही विचित्र प्रश्न पूछते हैं, उनके हिसाब से उनके लिए वह प्रश्न सबसे आवश्यक हो जाता है, कोई पूछता है कि मेरी

पत्नी मेरा क न नहीं मानती, मेरे विपरीत विचारधारा की है, कोई पूछता है मेरे सहयोगी मुझे आदर और सम्मान नहीं देते, कोई पूछता है कि मुझे गड़ा हुआ धन कब प्राप्त होगा ? मुझे लॉटरी से धन कब मिलेगा ? मैं अमुक को पूर्ण रूप से वशीकरण करना चाहता हूं, इसमें सफलता कब मिलेगी ? इस प्रकार जितने साधक, जितने शिष्य, उतने ही प्रश्न, और आश्चर्य यह है कि कोई यह नहीं पूछता कि मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है ? और मुझे अपने जीवन में पूर्णता कैसे प्राप्त होगी ? जब कि पूज्य गुरुदेव के विचार से यही प्रश्न सबसे अधिक प्रमुख प्रश्न है, जिसने इस प्रश्न का समाधान प्राप्त कर लिया, उसे अपने जीवन की छोटी-मोटी समस्याओं का समाधान तो अपने आप ही प्राप्त हो जाता है।

जीवन : आकर्षण का दूसरा नाम है

यह बात सबसे अधिक महत्वपूर्ण है, कि या तो आप किसी के प्रति पूर्ण रूप से आकर्षित हो जांय, या किसी को पूर्ण रूप से अपनी ओर आकर्षित करने की क्षमता उत्पन्न कर लें, जब आपके भीतर यह भाव आ जायेगा, तो आपकी दृष्टि ही बदल जायेगी, जीवन की रसहीनता समाप्त हो जायेगी, सब कुछ गहरा-गहरा सौन्दर्य से भरा, चेतना युक्त लगने लगेगा, जब तक डूबोगे नहीं तब तक मोती प्राप्त नहीं कर सकोगे, कार्य की यह पूर्णता आपकी छोटी-मोटी समस्याएं अपने आप सुलझा देगी, केवल इतना आवश्यक है, कि जीवन में विरक्ति का भाव हटा कर सकारात्मक दृष्टिकोण से जीवन जीना प्रारम्भ करें।

अपनी क्षमता कम मत आंकिये

पूज्य गुरुदेव कहते हैं, कि मेरा प्रत्येक शिष्य अपने आप में सम्पूर्ण बन सकता है, उसकी इच्छाएं पूरी होना तो बहुत साधारण बात है, उसमें क्षमता है, लेकिन वह अपनी क्षमता को बहुत कम आंकता है, अपने भीतर निराशा का भाव जल्दी भर देता है, जीवन को सम्पूर्ण रूप से आनन्द से भोगने के लिए अपने भीतर आशा, इच्छा के बीज, जो पूज्य गुरुदेव ने बोये हैं, उन्हें साधना-प्रयासों के जल से सिंचित कर आशा का विशाल वट वृक्ष खड़ा करना ही है, तभी इच्छा रूपी पूर्णता के सुन्दर पुष्प और फल लगेंगे, ऐसा प्रत्येक फल मिठास से परिपूर्ण होगा, और जीवन में आनन्द लहरों के निरन्तर झोंके रहेंगे।

कामना मधुरता और भोग

सौन्दर्य की कामना, साधना और उसका भोग ही जीवन की मधुरता है, इसीलिए शास्त्रों में जहां संन्यास तत्व को महत्व दिया गया है, वहीं कामना तत्व और भोग तत्व को भी उतना ही महत्व दिया गया है, यह मधुर भोग हर किसी के वश में भी नहीं है, जो अपने जीवन में प्रयास करते हैं, उन्हें ही तो यह तत्व प्राप्त होता है, सौन्दर्य साधनाओं का, अप्सरा साधनाओं का मूल स्वरूप जीवन में मधुर रस घोलना ही है।

अप्सरा साधना के विभिन्न स्वरूप हैं, विभिन्न प्रकार की साधनाएं हैं, और प्रत्येक पुरुष को यह साधना सम्पन्न करनी चाहिए, लेकिन इस साधना के भी कुछ विशेष नियम हैं, एक क्रम है, और इस क्रम के अनुसार साधना करने वाला साधक यह विशिष्ट सिद्धि अवश्य प्राप्त करता है।

अपनी कमियों को भूल जाइये, केवल इतना ध्यान रखिये कि मुझे हर हालत में यह सौन्दर्य सिद्धि प्राप्त करनी ही है, तभी सब कुछ प्राप्त हो सकता है, जो जीवन जी रहे हैं उसमें भी कामना पूर्ति सम्भव हो सकती है।

यक्षिणी, अप्सरा और देवी

शास्त्रों में स्त्री के यही तीन रूप ही बताये गये हैं, जहां अधिकार सहित सिद्धि प्राप्ति हेतु साधना की जाती है, और जो सबसे अधिक सरल रूप से सिद्ध हो सकती है, वह यक्षिणी साधना है।

जो अपने मनोहारी स्वरूप के साथ देवताओं के आधीन है, और बार-बार साधना करने से ही सिद्ध होती है, वे अप्सरा स्वरूपा हैं, और जो आराधना योग्य माता स्वरूपा शक्ति सम्पन्न हैं, वे देवी हैं, उनकी केवल माता रूप में ही

कल्पना, पूजा-साधना की जा सकती है, उनका आशीर्वाद साधक के लिए सब कुछ है ।

यक्षिणी साधना सरलतम साधना क्यों है ? इसमें कोई बहुत गहरा रहस्य नहीं है, यक्षिणी, अप्सरा साधना का ही दूसरा स्वरूप है, जो साधक की कामना पूर्ति में, उसके पुरुषार्थ को उभारने में, उसके बल, बुद्धि, वीर्य, तेज को सम्पूर्ण रूप से प्रगट करने में सर्वाधिक सहायक सिद्ध होती है, यक्षिणी साधना केवल प्रेमिका रूप में, पत्नी रूप में, भार्या रूप में ही सिद्ध की जा सकती है, जो कि जीवन भर आपकी सहचरी बन कर रहती है, क्योंकि यक्षिणी का प्रधान गुण ही पुरुषतत्व में समाहित हो कर उसे पूर्ण बनाना है, उसकी सुप्त शक्तियों को जाग्रत करना है ।

वट यक्षिणी : कामदा मनोहारी यक्षिणी

यक्षिणी साधना का सर्वोतम स्वरूप **वट यक्षिणी साधना** है, क्योंकि इस स्वरूप की आठ पीठ शक्तियां हैं और आठ आधार शक्तियां हैं, और इस प्रकार ये सोलह शक्तियां वट यक्षिणी की सोलह कलाएं हैं, और वट यक्षिणी को सिद्ध करने वाला साधक इन सोलह शक्तियों को पूर्ण रूप से प्राप्त करने का अधिकारी बन जाता है ।

पीठ शक्तियां – कामदा, मानदा, नक्ता, मधुरा, मधुरानना, नर्मदा, भोगदा, नन्दा एवं प्राणदा ।

आधार शक्तियां–सुनन्दा, चन्द्रिका, हासा, सुलापा, मदनविह्वला, आमोदा, प्रमोदा, एवं वसुदा ।

वट यक्षिणी सौन्दर्य का स्वरूप है, और सौन्दर्य के स्वरूप को ध्यान रखते हुए ही इसका ध्यान किया जाता है, मन को समस्त कामनाओं से युक्त करते हुए यक्षिणी का ध्यान और अपने वश में करने हेतु ही साधना करनी चाहिए, इस साधना में प्रार्थना तत्व कम है, वीर भाव सहित अधिकार तत्व ही प्रमुख है ।

वट यक्षिणी साधना—

- यह साधना शीघ्र सिद्धि प्रदायक तथा प्रत्यक्ष फलदायक साधना है ।
- इसे कोई भी पुरुष, विवाहित, अविवाहित, युवा, वृद्ध, गृहस्थ सम्पन्न कर सकता है ।
- प्रिया रूप में प्राप्त करने की जितनी अधिक इच्छा के साथ इसे सम्पन्न किया जाता है, उतनी ही जल्दी वट यक्षिणी सिद्ध होती है ।
- यदि वट यक्षिणी एक बार सिद्ध हो जाय, तो जीवन भर साधक की सहयोगी रहती है ।
- कामना पूर्ति, इच्छा पूर्ति, अनंग सुख, हेतु यह सर्वोत्तम साधना है ।
- वट यक्षिणी सिद्ध साधक के चेहरे पर एक विशेष तेज आ जाता है, और जीवन में सौन्दर्य, सुख, रस का आगमन प्रारम्भ हो जाता है ।
- वट यक्षिणी सिद्ध होने पर उसकी अधीनस्थ शक्तियां अपने आप सिद्ध हो जाती हैं ।

साधना सामग्री

इस साधना में मुख्य सामग्री **सर्वेष्ठ कामपूर्ण सिद्ध यक्षिणी यन्त्र, सोलह अभीष्ट सिद्धि कितवाह, अनंग मन्त्रों से अभिमन्त्रित यक्षिणी माला** के अतिरिक्त सोलह सुपारी (पूगी फल), सोलह पुष्प, सिन्दूर, जल पात्र आवश्यक है ।

सरल साधना क्रम

यह साधना रात्रि साधना है, और तीन रविवारों को सम्पन्न की जाती है, प्रथम रविवार को रात्रि १० बजे के उपरान्त साधक स्नान कर लाल वस्त्र धारण करें, अपने सामने एक बाजोट रख कर वस्त्र बिछाएं, चन्दन छिड़क कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर सामने बाजोट पर सर्वेष्ठ कामपूर्ण सिद्ध यक्षिणी यन्त्र स्थापित करें, और उस पर भरपूर मात्रा में सिन्दूर लगायें, सिन्दूर से ही उसके तिलक करें एवं घी का दीपक अवश्य जला दें ।

अपने हाथ में जल लेकर संकल्प करें, कि—

" मैं यह यक्षिणी साधना यक्षिणी को अपनी प्रिया रूप में

स्वीकारते हुए, अपनी समस्त कामनाओं की पूर्ति हेतु सम्पन्न कर रहा हूं, यक्षिणी मुझे प्रिया रूप में स्वीकार करे।" एवं जल छोड़ दें, तत्पश्चात् यक्षिणी का ध्यान वीर मुद्रा में बैठ कर करें और सुगन्धित पुष्पों की माला यक्षिणी यन्त्र पर चढ़ा दें।

तदुपरान्त अपने सामने एक अलग थाली में रखे हुए मन्त्र सिद्ध क्रितवाह एक-एक कर स्थापित करें, ये सोलह क्रितवाह यक्षिणी की सोलह शक्तियों के प्रतीक हैं, यन्त्र के सामने पहिले एक क्रितवाह स्थापित करें, फिर सिन्दूर में डुबा कर एक सुपारी उसके सामने रखें, और उस शक्ति से सम्बन्धित मन्त्र बोलें, इसके क्रम और मन्त्र निम्न प्रकार से होंगे—

ॐ कामदायै नमः ॐ मधुरायै नमः
ॐ भोगदायै नमः ॐ मानदायै नमः
ॐ मधुराननायै नमः ॐ नन्दायै नमः
ॐ नक्तायै नमः ॐ नर्मदायै नमः
ॐ सुनन्दायै नमः ॐ सुलापायै नमः
ॐ प्रमोदायै नमः ॐ चन्द्रिकायै नमः
ॐ मदनविह्वलायै नमः ॐ वसुद यै नमः
ॐ हासायै नमः ॐ आमोदायै नमः

प्रत्येक शक्ति के आगे एक-एक पुष्प पंखुड़ी अवश्य चढ़ाएं, अन्त में स्वशक्ति प्राणदा स्थापित करें।

शक्ति स्थापना के इस क्रम के साथ ही वातावरण में एक ऊष्णता उत्पन्न होती है और साधक को गर्मी जैसा अनुभव होता है, पसीना आने लगता है, यह शुभ लक्षण है, यह तो यक्षिणी के आगमन का संकेत है, क्योंकि जहां यक्षिणी की पीठ शक्तियां और आधार शक्तियां होंगी, वहीं वट यक्षिणी भी स्थान ग्रहण करती है।

अब साधक एक दीपक जलाएं और इसे दूसरी दिशा में रख दें तथा **वट यक्षिणी यन्त्र** पर चढ़ाई गई सुगन्धित पुष्प माला को अपने गले में धारण कर **यक्षिणी माला** से निम्न मन्त्र जप करें—

वट यक्षिणी मन्त्र

॥ श्रीं श्रीं यक्षिणी हं हं हं स्वाहा ॥

नियमानुसार साधक को प्रसन्न मुद्रा में ११ माला मन्त्र जप करना चाहिए, कई बार पांचवीं माला मन्त्र जप समाप्त होते-होते संगीत, नूपुर की ध्वनि सुनाई देनी प्रारम्भ होती है, उस समय मन्त्र जप बन्द न करते हुए निर्भय होकर मन्त्र जप करते रहें, मन्त्र जप समाप्त होते-होते मदनातुर यक्षिणी साधक को अपने आलिंगन में भरने हेतु प्रत्यक्ष दिखाई देती है, और साधक के साथ समाहित हो जाती है।

ऐसे समय में साधक यक्षिणी के सामने जो भी इच्छा व्यक्त करता है, वह इच्छा पूरी करने का अभीष्ट वर प्राप्त होता है।

हो सकता है, कि प्रथम रविवार को सफलता प्राप्त न हो, तो इसी क्रम में साधना दूसरे तथा तीसरे रविवार को सम्पन्न करना चाहिए।

एक बार यक्षिणी सिद्ध हो जाने पर जब भी आवश्यकतानुसार साधक यक्षिणी मन्त्र का जप करता है तो तत्काल यक्षिणी उपस्थित होती है।

तीन रविवार के पश्चात् साधक यक्षिणी यन्त्र को तो अपने शयन कक्ष में स्थापित कर दें तथा सोलह क्रितवाह, सुपारी सहित उसी लाल कपड़े में बांध कर जलाशय में अर्पित कर दें।

यक्षिणी साधना में ऐसा कुछ भी नहीं है, जिससे साधक को भ्रम, भय उत्पन्न हो, क्योंकि यक्षिणी प्रिया रूप में सिद्ध होने पर साधक की सार्थक सहयोगी बनती है, और साधक के सब प्रकार के सुखों में, मनोरथ की पूर्ति में वृद्धि करती है। ●

'मन्त्र महाकौमुदी' से

सिद्ध सरल—विरल प्रयोग

जिन्हें अपने पूरे आत्मविश्वास के साथ सम्पन्न कीजिये और फल की चिन्ता मत करिये, क्योंकि इन सिद्ध प्रयोगों का अचूक फल प्राप्त होना तो निश्चित ही है

साधना विधियां सरल भी होती हैं और जटिल भी, जहां साधना का लम्बा-चौड़ा विशेष विधान होता है, वे साधनाएं स्थायी होती हैं, और और उनका प्रभाव भी लम्बे समय तक रहता है, आजकल तो हर कोई तुरन्त-फुरत साधना में सफलता प्राप्त करना चाहता है, और इस युग को देखते हुए यह आवश्यक है, कि यदि कोई आकस्मिक बाधा आ जाय, तो उसका तत्काल उपाय किया जा सके, जिससे स्थिति बिगड़ न पाये।

साधक छोटे-छोटे मन्त्रों, छोटे-छोटे प्रयोगों को उत्साहित हो कर सम्पन्न करता है, और इन लघु प्रयोगों में सफलता मिलने पर ही वह आगे बड़ी साधनाएं करने में प्रवृत्त होता है, कई साधक जिनका मन्त्र-तन्त्र पर विश्वास कम होता है वे भी आजमाइश के तौर पर कुछ मन्त्र प्रयोग सम्पन्न कर सकते हैं, प्रयोग प्रभाव देने पर ही वे ज्ञान के इस महासागर में उतर सकते हैं।

नीचे कुछ ऐसे विशेष सरल, सिद्धिदायक, तात्कालिक फल देने वाले मन्त्र प्रयोग दिये जा रहे हैं, जिन्हें हर साधक सरलतापूर्वक सम्पन्न कर सकता है, आवश्यकता इतनी है, कि जो भी प्रयोग सम्पन्न करें, पूर्ण आस्था और विश्वास के साथ करें।

१-आकस्मिक धन प्राप्ति का मणिभद्र प्रयोग

आकस्मिक धन प्राप्ति का तात्पर्य केवल लॉटरी, अथवा जुआ ही नहीं है, इसका तात्पर्य मूल रूप से यह है, कि यदि पैसे की कभी कोई कमी आ जाय, तो नया स्रोत बन जाता है, कार्य रुकता नहीं है।

बुधवार के दिन किसी एकान्त स्थान पर जमीन साफ कर उस पर लकड़ी का पट्टा बिछा दें, उसके ऊपर सिन्दूर से **'श्रीं'** लिखें और उस पर लाल वस्त्र बिछा कर पट्टे के मध्य में **'मणिभद्र यन्त्र'** स्थापित कर दें, उसके ऊपर एक नारियल रखें और इस नारियल पर सिन्दूर से तीन तिलक करें, नारियल के मध्य में **"ॐ मणि भद्राय नमः"** लिख दें, फिर इसके सामने घी का दीपक जलाएं, पूर्व दिशा की ओर मुंह कर निम्न मन्त्र का जप करें, ग्यारह माला मंत्र जप अनिवार्य है—

मन्त्र

।। ॐ नमो मणि भद्राय आयुध-धराय मम लक्ष्मी वांछितं पूरय ऐं ह्रीं क्लीं सौः मणिभद्राय नमः ।।

सातवें दिन के पश्चात् ही प्रत्यक्ष लाभ मिलना प्रारम्भ हो जाता है, और जहां कोई आशा नहीं होती है, वहां से भी धन प्राप्ति का योग बनता है, ऐसे शुभ मन्त्र का जप तो निरन्तर अवश्य करना चाहिए।

२-विशेष कार्य सिद्धि प्रयोग मन्त्र

कई बार कोई कार्य विशेष ऐसा अटक जाता है, कि बार-बार प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिलती है, यह कार्य पदोन्नति से सम्बन्धित भी हो सकता है, सरकारी बाधा निवारण का भी हो सकता है, अथवा कोई विशेष लक्ष्य से सम्बन्धित भी।

मंगलवार रात्रि को स्नान कर लाल आसन पर बैठ कर अपने सामने काले तिल की पांच ढेरियां, बनाएं और प्रत्येक ढेरी पर एक **'हैरम्ब'** स्थापित करें, और पांच तेल के दीपक जला दें, तथा स्वयं के तिलक कर एक माला निम्न मन्त्र का जप सम्पन्न करें, आवश्यक है कि मन्त्र जप के मध्य में उठना नहीं है।

मन्त्र

तत्सवितुर्वरेण्यं महत्कम्या ज्वल ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा धियो योनः प्रचोदयात् पर ज्योतिमहा ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल स्वाहा परो रजसे सावदों परं ज्योति कोटि चन्द्रर्कादीन् ज्वल ज्वल स्वाहा ओमापो ज्योति रसोमृत ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम् सर्व-तेजो ज्वल ज्वल स्वाहा ।।

मन्त्र जप पूरा हो जाने के पश्चात् अपने घर के आंगन में अथवा छत पर जा कर एक हैरम्ब पूर्व दिशा में, एक पश्चिम दिशा में, एक उत्तर दिशा में और एक दक्षिण दिशा में फेंक दें, और पांचवा हैरम्ब आकाश की दिशा में उछाल दें तथा गुरु ध्यान करते हुए सो जांय।

यह ऐसा सफल प्रयोग है, कि यदि किसी विशेष मनोरथ की पूर्ति हेतु किया गया है, तो सातवें दिन ही परिणाम सामने आने लगता है, रुके हुए कार्य की पूर्ति हेतु सहयोग अपने आप प्राप्त हो जाता है।

३-रोग निवारण प्रयोग

घर में या अन्य किसी को भी किसी भी प्रकार का रोग हो, अथवा ज्योतिषियों ने अकाल मृत्यु बताई हो, अथवा मृत्यु भय की आशंका हो, चारों तरफ शत्रु बढ़ गये हों, किसी भी क्षण विपदा आने की सम्भावना हो, तो ऐसी किसी भी स्थिति में यह प्रयोग तुरन्त प्रभाव देता है, और उस पर आई हुई विपत्ति को दूर कर देता है।

मैंने इस प्रयोग को कई बार किया है और हर-बार मुझे सफलता मिली है।

मन्त्र सिद्ध **"श्वेतार्क गणपति"** को बुधवार के दिन लाल वस्त्र बिछा कर उस पर स्थापित कर दें और उस पर सिन्दूर का तिलक करें, अपने ललाट पर भी सिन्दूर का ही तिलक करें, इसके बाद **'गं गणपतयै नमः'** मन्त्र से गणपति को भोग चढ़ावें, दीपक लगावें और पूजन करें, इसके बाद **स्फटिक या पारे से बने हुए शिवलिंग** को स्थापित करें, और 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र से उनका पूर्ण रूपेण पूजन करें।

ऐसा करने के बाद हाथ में जल ले कर निम्न विनियोग करें—

विनियोग

अस्य श्री अमृत-मृत्यंजय कहोल ऋषिः। विराट् छन्दः, मृत्युंजय सदाशिवो देवता, अमुक गोत्रोत्पनो, अमुक शर्मणों समस्त रोग अपमृत्यु-निवारणार्थ जपे विनियोग।

विनियोग के बाद निम्न मन्त्र का पांच हजार मन्त्र जप करें—

मन्त्र

।। ॐ अमृत मृत्यंजयायै नमः ।।

कुल सवा लाख मन्त्र जप करने पर पूर्ण सफलता प्राप्त होती है पर इस मन्त्र का विशेषता है कि जिस दिन से मन्त्र जप प्रारम्भ होता है, उसी दिन से रोगी के रोग सुधार होना शुरु हो जाता है, और सवा लाख मन्त्र जप सम्पन्न होते-होते उसका रोग पूर्णतया समाप्त हो जाता है।

वास्तव में ही यह एक चमत्कारी मन्त्र है, और स्वयं के लिए या किसी के लिए भी इसका प्रयोग किया जा सकता है।

भय बाधा शान्ति—शरीर रक्षा प्रयोग

जीवन में तो चिन्ताएं लगी ही रहती हैं, कई बार जाने-अनजाने में कुछ गलतियां हो जाती हैं, कई बार शत्रु प्रबल हो जाते हैं, तो हर समय एक अज्ञात आशंका भय मन में समाया रहता है, कि कहीं कोई मुझे हानि न पहुंचा दे, ऐसी स्थिति में साधक को यह रक्षा प्रयोग अवश्य करना चाहिए, यह प्रयोग वास्तव में चिन्तानाशक तथा भय के मूल कारण को दूर करने का प्रयोग है।

इस **"भैरव रक्षा प्रयोग"** में रविवार के दिन रात्रि को साधक काले आसन पर वीर मुद्रा में बैठें और अपने सामने एक ताम्र पात्र में **भैरव गुटिका** स्थापित कर दें, और उस पर सिन्दूर चढ़ाएं, भैरव को जो सिन्दूर चढाएं उसी सिन्दूर से अपने भी तिलक करें और तेल का दीपक जला दें, अपने गुरु का ध्यान कर कार्य प्रारम्भ करें, इस प्रयोग में सरसों का प्रयोग किया जाता है, अतः इसकी व्यवस्था पहले से कर लें, इस सरसों के दानों को मुट्ठी में भर कर दसों दिशाओं में फेंकते हुए निम्न मन्त्र का उच्चारण करें, इस प्रकार कुल दस बार मन्त्र उच्चारण होता है।

मन्त्र

।। हूं हूं ह्रीं ह्रों कालिके घोर दंष्टे प्रचण्ड चण्ड-नायिके दानवान् दारय हन हन शरीरे महा-विघ्न छेदय छेदय स्वाहा हूं फट् ।।

यह मन्त्र अत्यन्त तीव्र एवं शीघ्र सिद्धिदायक है, अतः साधक को केवल आजमाने के तौर पर इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए, यदि किसी साधक को साधना में विचित्र दृश्य दिखाई दे, तो यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, यदि कोई मित्र, सम्बन्धी, परिवार का बालक, बालिका, भूत-प्रेत से डरता हो, मन में भय समा गया हो, तो इस मन्त्र का उच्चारण करते हुए सरसों के दाने उसके चारों ओर तथा उसके शरीर पर फेंकें, तो कितना ही प्रबल भय हो अथवा कितनी ही प्रबल भूत-प्रेत बाधा हो तो समाप्त हो जाती है, और देह रक्षा का यह सर्वोत्तम प्रयोग है।

५-सन्तान उन्नति प्रयोग

अपनी सन्तान को अपने से अधिक उन्नत देखने की इच्छा हर मां-बाप की रहती है, यदि बच्चे बीमार रहते हों, शिक्षा की दृष्टि से परेशानी रहती हो, तो अपनी सन्तान की पूर्ण उन्नति के लिए उनके माता-पिता को यह प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

गुरुवार के दिन बच्चे के माता-पिता सूर्योदय से पहले उठ कर स्नान कर, शुद्ध वस्त्र धारण कर दोनों सूर्य

नमस्कार करें, सूर्य को तीन बार अर्घ्य अर्पित करें, और फिर अपने पूजा स्थान में सरस्वती का चित्र स्थापित कर उसके सामने **"सरस्वती यन्त्र"** स्थापित करें, इस यन्त्र पर केवल चन्दन चढ़ाएं और सम्भव हो तो अपने बच्चे के भी चन्दन का तिलक करें, फिर अपने हाथ में जल ले कर वाग्देवी का ध्यान करते हुए सन्तान रक्षा एवं उन्नति की प्रार्थना करते हुए निम्न मन्त्र का जप करें—

मन्त्र

।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं वाग्वादिनी सरस्वति मम् (बालक का नाम) जिह्वाग्रे वद वद
ॐ ऐं ह्री श्रीं क्लीं नमः स्वाहा ।।

यह मन्त्र केवल तुलसी माला से ही जपना चाहिए, यह प्रयोग पांच गुरुवार को सम्पन्न करने से सन्तान की बुद्धि, विद्या एवं ज्ञान वृद्धि होती है तथा दोषों से उसकी रक्षा रहती है, पांच गुरुवार के बाद यह यन्त्र अपने बालक को गले में पहना दें अथवा दाहिनी भुजा पर बांध दें । ●

विशेष

पत्रिका के जून १९९१ के अंक में **"पारदेश्वर शिवलिंग"** से सम्बन्धित जो लेख प्रकाशित हुआ था, उस सम्बन्ध में अधिक जानकारी हेतु पाठकों के पत्र निरन्तर प्राप्त हो रहे हैं ।

बहुत से पाठकों ने समय पर पत्र भेज कर 'पारदेश्वर शिवलिंग' प्राप्त कर लिया है, लेकिन कुछ पाठक विशेष कारणवश समय पर नहीं मंगा सके हैं, और एक महीने की जो समय सीमा रखी गयी थी, उसे बढ़ाने की मांग की है ।

यह सूचित करते हुए हर्ष है, कि पूज्य गुरुदेव ने आदेश दिये हैं कि शारदीय नवरात्रि, अर्थात् ८ अक्तूबर १९९१ तक, जिस किसी साधक का, शिष्य का पत्र आ जाय, उसे पारदेश्वर शिवलिंग अवश्य भेजा जाय ।

कई पाठकों ने लिखा है, कि उन्होंने तो **पारदेश्वर शिवलिंग** स्थापित किया ही है, उनके कुछ मित्र, परिचित, स्वजन भी यह विशेष, अद्भुत **पारदेश्वर शिवलिंग** स्थापित करना चाहते हैं, इस सम्बन्ध में पाठकों से निवेदन है, कि वे अपने मित्रों, स्वजनों को इस अमृत तुल्य पुण्य का भागी बना सकते हैं, अपने स्वजन अथवा मित्र का नाम व पता साफ-साफ लिख कर भेजें, तथा वी०पी० छुड़ाने के सम्बन्ध में व्यक्तिगत गारण्टी लें, यदि किसी पत्रिका सदस्य का पत्र आयेगा, तो ही पारदेश्वर शिवलिंग भेजा जायेगा, सीधे किसी को यह महत्वपूर्ण **पारदेश्वर शिवलिंग** नहीं भेजा जायेगा । ★

पुष्य नक्षत्र की इतनी अधिक महत्ता क्यों ?

पिछले कुछ अंकों से पाठकों को ज्योतिष सम्बन्धी प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध कराई जा रही है, और पाठकों के भी पत्र इस विषय में निरन्तर प्राप्त होते रहते हैं, 'पुष्य नक्षत्र' योग के सम्बन्ध में बहुत अधिक पाठकों ने जानकारी चाही है, इस सम्बन्ध में प्रामाणिक विवेचन—

ज्योतिष का आधार ही काल गणना है, जिस समय ग्रहों का योग श्रेष्ठ रहता है, उसे मुहूर्त कहा गया है, अलग-अलग कार्यों के लिए अलग-अलग मुहूर्त का विधान रहता है, इसी प्रकार गणना के आधार पर जो श्रेष्ठ योग बनते हैं, उन्हें सिद्धि योग, सर्वार्थ सिद्धि योग कहा गया है, ऐसे शुभ योगों में शुभ कार्य प्रारम्भ किये जाते हैं, इसी प्रकार पुष्य नक्षत्र को भी अपने आपमें पूर्ण माना गया है और **'पाणिनी संहिता'** में लिखा है कि 'पुष्य सिद्धयौ नक्षत्रे'—

सिध्यन्ति अस्मिन् सर्वाणि कार्याणि सिध्यः।
पुष्यन्ति अस्मिन् सर्वाणि कार्याणि इति पुष्य ।।

अर्थात् पुष्य नक्षत्र में सभी कार्य सिद्ध हो जाते हैं, सम्पूर्ण हो जाते हैं।

इसी प्रकार पुष्य शब्द से ही पौष्टिक शब्द बना है, अर्थात् जो नक्षत्र पुष्टिकारक है, वह पुष्य नक्षत्र ही है, यदि किसी गुरुवार को पुष्य नक्षत्र आता है, तो उसे ''गुरु पुष्य'' कहा जाता है, और यह योग पूर्ण सिद्धि योग कहा जाता है—

गुरो पुष्य समायोगे सिद्ध योगः प्रकीर्तितः ।

ऐसे ही गुरु पुष्य नक्षत्र में गुरु साधना, आराधना प्रारम्भ की जानी चाहिए, पुष्य नक्षत्र का महत्व इसी से अनुमान किया जा सकता है कि **शिव पुराण** में, जो कि भगवान शंकर की स्तुति का महान ग्रन्थ है, उसमें विवरण है कि—

क्रतूनामश्वमेघोऽसि युगानां प्रथमो युगः ।
पुष्यस्त्वं सर्वधिष्ण्यानाममावास्या तिथिष्वसि ।।

देवतागण भगवान शंकर से कहते हैं कि, "आप यज्ञों में अश्वमेघ, युगों में सत्य युग, नक्षत्रों में पुष्य तथा तिथियों में अमावस्या हैं।"

पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि सभी योग विरुद्ध हों, तो भी पुष्य नक्षत्र में किया गया कार्य सिद्ध हो जाता है, पुष्य नक्षत्र अन्य योगों के दोषों को दूर कर देता है, और पुष्य के गुण किसी भी दुर्योग द्वारा नष्ट नहीं हो सकते।

नारद संहिता के अनुसार—

सर्वसिद्धिकरः पुष्यः कारग्रहं विना सर्व कर्म देवेज्यभे शुभम् ।।

अर्थात् पुष्य नक्षत्र, **सर्व सिद्धिकर योग** बनाता है, और इस नक्षत्र में ग्रहों आदि को देखने की आवश्यकता नहीं है, सब शुभ कर्म सम्पन्न किये जा सकते हैं।

पुष्य नक्षत्र की महिमा के बारे में लिखा है, कि

सिंहो यथा सर्व चतुष्पादानां तथैव पुष्यो बलवानुड्नाम ।।

पापविद्ध युते हीने चन्द्र तारा बलेऽपि च ।
पुष्ये सिद्धयन्ति सर्वाणि कार्याणि मंगलानि च ।।

अर्थात् चाहे योग क्षीण हो, तारा बल भी न हो, तो भी पुष्य नक्षत्र होने पर यह दोष नहीं लगता है।

चन्द्रमा अष्टमी का सबसे हलका और दोषयुक्त माना जाता है, लेकिन यदि पुष्य नक्षत्र है तो वह इस दोष को भी शान्त कर देता है।

गुरु पूजन, व्यापारिक कार्य, औषधि, आभूषण, विद्या, ज्ञान, भवन निर्माण, विविध पूजा आदि सभी के लिए पुष्य नक्षत्र श्रेष्ठ शान्तिकारक एवं पौष्टिक कार्यों में पूर्ण सिद्धि दिलाने वाला कहा गया है।

नोट : विशेष बात यह है कि पुष्य नक्षत्र सभी शुभ कार्यों हेतु प्रयोग में लाया जा सकता है, लेकिन केवल विवाह पुष्य नक्षत्र के योग में सम्पन्न नहीं किया जा सकता, शास्त्र विधान के अनुसार यह पूर्णतया वर्जित है।

पुष्य नक्षत्र प्रयोग

ऐसे विशिष्ट योग में शान्ति हेतु, शत्रु बाधा नाश हेतु, आर्थिक पुष्टि हेतु, श्री एवं सौभाग्य पूर्णता के साथ-साथ वशीकरण सिद्धि प्रयोग सम्पन्न किये जा सकते हैं, और इन प्रयोगों में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है—

१- मुकदमा विवाद विजय प्रयोग

पुष्य नक्षत्र में **'सिद्ध पारिजात'** हाथ के बांयी बांह पर बांध कर निम्न मन्त्र का २१ बार जप करें—

।। ॐ शान्तै प्रशान्तै सर्व क्रोधोपशमति स्वाहा: ।।

इसके पश्चात् मुंह धो लेने से साधक पर कोई व्यक्ति क्रोध नहीं कर सकता, अथवा उससे विवाद नहीं कर सकता।

२- वशीकरण-स्तम्भन प्रयोग

पुष्य नक्षत्र के समय **'घुरसचिवा'** के २१ दाने ले कर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए एक-एक कर २१ दाने फेंक दिये जांय तो वह स्तम्भित हो जाता है और आपके वशीभूत हो कर कहे अनुसार कार्य करता है—

॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं श्रीं श्रीं श्रीं स्वाहा ॥

पुष्य नक्षत्र गुरुवार को अथवा दशमी को आये तो भवन, कला, ज्ञान, विद्या, आभूषण, अनुष्ठान आदि सभी कार्यों में सिद्धि दिलाने वाला माना गया है, इस दिन ऐसे शुभ प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करने चाहिए।

दशमी तिथि का पुष्य नक्षत्र **'अमृत योग'** बनाता है, और आरोग्य और श्रीवृद्धि के लिए यह सर्वोत्तम योग है, इस दिन पूर्ण विधि-विधान सहित **'अमृत श्री वृद्धि साधना'** करनी चाहिए, इससे साधक को पूर्ण ऋद्धि-सिद्धि एवं तुष्टि प्राप्त होती है।

प्रत्येक शिष्य का कर्त्तव्य है, कि वह नियमित रूप से गुरु पूजन अवश्य सम्पन्न करे और जब 'गुरु पुष्य' हो, अर्थात् गुरुवार के दिन पुष्य नक्षत्र हो तो उस दिन तो विशेष अनुष्ठान सहित पूरे परिवार के साथ पूजन करना चाहिए क्योंकि सभी सिद्धियों का मूल आधार गुरु कृपा ही है।

आगे इस वर्ष के पुष्य नक्षत्रों का विवेचन दिया जा रहा है, साधक इन शुभ योगों से अवश्य ही लाभ उठाएं।

तारीख	तिथि	वार	समय	विशेष
८-८-९१	श्रावण कृष्ण १३	गुरुवार	रात्रि ११।२७ से पूर्ण रात्रि	सर्वार्थ सिद्धि योग
९-८-९१	श्रावण कृष्ण १४	शुक्रवार	प्रातः ८।२२ तक	अमृत योग
५-९-९१	भाद्रपद कृष्ण १२	गुरुवार	प्रातः ८।३४ से सायं ६।१८ तक	गुरु पुष्य अमृत सिद्धि योग
२-१०-९१	आश्विन कृष्ण ९	बुधवार	दोपहर ३।२८ से पूर्ण रात्रि	सौभाग्य योग
३-१०-९१	आश्विन कृष्ण १०	गुरुवार	सूर्योदय से दोपहर १।५६ तक	अमृत पूर्ण गुरु पुष्य
२९-१०-९१	कार्तिक कृष्ण ७	मंगलवार	रात्रि ९।१३ से पूरी रात	स्थिर योग
३०-१०-९१	कार्तिक कृष्ण ८	बुधवार	सूर्योदय से सायं ७।५१ तक	ऋद्धि सिद्धि योग
२५।२६-११-९१	मार्गशीर्ष कृष्ण ४	सोमवार	रात्रि ३।५१ से सूर्योदय तक	सर्वार्थ सिद्धि योग
२६।२७-११-९१	मार्गशीर्ष कृष्ण ५	मंगलवार	सूर्योदय से रात्रि २।१४ तक	,,
२३-१२-९१	पौष कृष्ण २	सोमवार	दोपहर १।३ से पूरी रात्रि	सर्वार्थ सिद्धि योग
२४-१२-९१	पौष कृष्ण ३	मंगलवार	सूर्योदय से १०।३० तक	,,

शिष्य के लिए दीक्षा क्यों आवश्यक ?

पूर्ण शिष्य वही हो सकता है, जिसने दीक्षा ग्रहण की हो, दीक्षा केवल सद्गुरुदेव द्वारा ही अपने शिष्य को प्रदान की जाती है और इसमें बहुत बड़ा रहस्य है, क्योंकि यही शुद्ध मार्ग का आधार है ।

- शिष्य के लिए यह आवश्यक है, कि जब वह अपने सद्गुरुदेव को प्राप्त कर ले तो वह उनसे दीक्षा अवश्य प्राप्त कर ले ।
- दीक्षा प्राप्त कर साधक शिष्य बन जाता है, और शिष्य के कर्त्तव्यों में जहां वृद्धि होती है, वहीं उसके अधिकारों में भी वृद्धि होती है ।
- दीक्षा का तात्पर्य है, पूज्य गुरुदेव द्वारा ज्ञान, शक्ति, और सिद्धि का दान, तथा शिष्य के अज्ञान, पाप और दारिद्रय का क्षय ।
- प्रत्येक व्यक्ति अलग-अलग योनि से, अलग-अलग पूर्व जन्म-दोषों के साथ, सुप्त मन, असुप्त मन से मनुष्य योनि धारण करता है, और उसके जीवन को सही दिशा देने के लिए दीक्षा ग्रहण करना अनिवार्य है ।
- दीक्षा से ही शरीर की समस्त अशुद्धियों का नाश होता है, और देह शुद्ध होने पर देव पूजा का अधिकार तथा दिव्य सिद्धि का स्वरूप प्राप्त होता है ।
- दीक्षा प्राप्त शिष्य ही अपनी कुण्डलिनी जागृत कर सकता है, और मूल शक्ति ब्रह्मरन्ध्र तक पहुंच सकती है ।
- दीक्षा गुरुदेव की ओर से आत्मज्ञान, ज्ञान संचार, तथा शक्तिपात है, जो शिष्य में सुप्त ज्ञान और शक्तियों को जागृत करती है ।
- जिस प्रकार श्रेष्ठ वैद्य रोग का निर्णय कर उसके लिए उचित औषधि प्रदान करता है उसी प्रकार दीक्षा द्वारा गुरुदेव, शिष्य के दोषों के निवारण का उपचार करते हैं ।
- सबसे श्रेष्ठ दीक्षा वह होती है, जिसमें पूज्य गुरुदेव स्वयं शिष्य के सामने बैठ कर अपने हस्त से उसके सिर का स्पर्श करते हुए उसे अपना शिष्य स्वीकार करते हुए मन्त्र-दान प्रदान करते हैं ।
- दीक्षा बन्धन नहीं है, यह तो सब दोष बन्धनों को काट देने वाला दिव्यास्त्र है ।
- दीक्षा गुरु कृपा का श्रेष्ठ फल है और गुरु कृपा बिना तो प्रभु की कृपा भी प्राप्त नहीं हो सकती ।

नारायणोऽपि विकृतिं याति गुरोः प्रच्युतस्य दुर्बुद्धेः ।
कमलं जलादपेतं शोषयाति रविर्न पोषयति ।।

जिस प्रकार कमल को विकसित करने वाला सूर्य ही कमल को जल से अलग होने पर उसे सुखा देता है, उसी प्रकार सद्गुरुदेव की कृपा बिना, दीक्षा बिना, शिष्य का अनुग्रह तो भगवान भी नहीं करते हैं ।

राहु ग्रह–पीड़ा, भय, हानि दे सकता है

तो

इसकी शान्ति का शीघ्र उपाय कीजिये

क्रूर एवं अनिष्टकारी ग्रहों के फलस्वरूप शुभ ग्रहों का लाभ भी समाप्त हो जाता है, राहु सबसे अधिक प्रबल क्रूर ग्रह माना गया है, इस सम्बन्ध में व्यक्ति, दोष को दूर करने हेतु क्या करे? राहु पीड़ा क्या है? इसका दुखद-सुखद फल कैसे प्राप्त होता है? एक विस्तृत विवेचन।

मूल रूप से तो जन्मकुण्डली में सूर्य, चन्द्र, मंगल, बृहस्पति, शनि, बुध तथा शुक्र ग्रह ही माने गये हैं, लेकिन इसके अतिरिक्त दो छाया ग्रह राहु और केतु का प्रभाव भी अन्य ग्रहों की भांति व्यक्ति के जीवन पर पूर्ण रूप से पड़ता है।

मूल रूप से यह दुष्ट, नीच, अशुभ, क्रूर तथा बलवान ग्रह है, जिस भाव में स्थित होता है, उसका ही नाश करता है, राहु का विशेष प्रभाव व्यक्ति के १८ वें वर्ष से ४८ वें वर्ष के बीच प्रबल रूप से रहता है।

राहु का प्रभाव

प्रत्येक ग्रह कुछ विशेष कार्यों, वस्तुओं का कारक ग्रह होता है और उस क्षेत्र पर उसका प्रभाव सर्वाधिक रहता है, इस दृष्टि से राहु शारीरिक शक्ति, परिश्रम, साहस, दुर्भाग्य, चिन्ता, शत्रुता, सकट, दुर्घटना, विलासिता, राजनीति, यात्रा का कारक ग्रह है, इसके अतिरिक्त व्यवसाय में इसका मुख्य प्रभाव मशीनरी, चित्रकारी, मुद्रण इत्यादि से सम्बन्धित है, नीले रंग की वस्तुओं, शीशा, लोहा, वाहन, चमड़ा इत्यादि पर भी इसका आधिपत्य माना गया है, इस प्रकार किसी भी दृष्टि से जन्मपत्रिका का अध्ययन करें, तो राहु की स्थिति पर विचार करना अत्यन्त आवश्यक है।

राहु, बुध, शुक्र और शनि का मित्र ग्रह तथा सूर्य, चन्द्रमा तथा मगल का शत्रु है, गुरु से उसका समभाव है, राहु तो ग्रहण कारण ग्रह है, अतः सूर्य, जो कि व्यक्तित्व का कारक ग्रह है, चन्द्रमा, जो कि जीवन में सौन्दर्य-रस-आनन्द का कारक ग्रह है, से यदि इन दोनों में से किसी का भी संयोग अथवा दृष्टि-प्रभाव राहु से हो जाय, तो उसका प्रभाव अत्यन्त क्षीण हो जाता है।

राहु दोष और उनका व्यक्ति पर प्रभाव

– जन्मकुण्डली में प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ, सप्तम्, नवम, दशम्, एकादश भाव में राहु की स्थिति अशुभ फल देती है।

– राहु का प्रभाव आने पर व्यक्ति को व्यापार में हानि, उदर रोग विशेष रूप से रहता है।

- राहु की दशा में संतान सम्बन्धी कष्ट विशेष रूप से रहता है।
- राहु व्यक्ति को अविवेकी, चिन्तातुर, तथा खर्चीला बना देता है।
- विपरीत स्थिति में राहु व्यक्ति के दुर्भाग्य एवं चित्त दोष का कारण बनता है।
- राहु प्रबल हो तो व्यक्ति राजनीति में विशेष सफलता अवश्य प्राप्त करता है परन्तु पारिवारिक दृष्टि से उसे हानि प्राप्त होती है।
- राहु यदि छठे भाव में प्रबल हो, तो व्यक्ति शत्रुओं पर हावी रहता है, अन्य भाव में राहु होने पर शत्रु विशेष हावी रहता है।
- यदि इनमें से कोई संताप आपको है, तो आपको मान लेना चाहिए कि आप पर राहु का प्रभाव है।

राहु पीड़ा दोष का निवारण

यदि कोई रोग है, तो उसकी औषधि, उसका इलाज भी अवश्य होता है, रोग की जानकारी होने के पश्चात् भी यदि उसका इलाज न करायें, तो वह स्वविनाश की क्रिया ही होगी, इस प्रकार यदि राहु दोष है, तो उसका उपाय अवश्य करना चाहिए, अन्यथा एक बार हानि, दोष, पीड़ा होने पर उससे निकालना अत्यन्त दुःसाध्य हो जाता है।

सामान्य रूप से ज्योतिषी लोग राहु की विपरीत स्थिति होने पर 'गोमेद रत्न' धारण करने की सलाह देते हैं, लेकिन यह प्रभावकारी नहीं कहा जा सकता, राहु कृत दोष निवारण हेतु अन्य ग्रहों की स्थिति को भी ध्यान में विशेष रूप से रखना चाहिए।

राहु दोष पूजा

रविवार की रात्रि को साधक १० बजे के पश्चात् राहु शान्ति कार्य प्रारम्भ करें, अपने सामने एक बाजोट पर काला वस्त्र बिछाएं और उसके मध्य में मन्त्र सिद्ध **'राहु यन्त्र'** स्थापित करें, इस राहु यन्त्र पर सरसों का तेल तथा सिन्दूर मिला कर तिलक करें, इसके अतिरिक्त प्रतीक स्वरूप तिल, लोहे का टुकड़ा, नीला वस्त्र, सामने तांबे का बना छोटा सर्प रखें, अपने दांयी ओर सरसों के तेल का दीपक जलायें, तथा अपने हाथ में जल लेकर राहु पूजा का संकल्प कर निम्न मन्त्र ग्यारह बार पढ़ें—

आह्वान मन्त्र

॥ ॐ भूर्भुवः स्वः राहो इहागच्छ इह तिष्ठ। राहवे नमः।

प्रत्येक बार आह्वान मन्त्र बोलने के साथ एक तिल की ढेरी बना कर उस पर एक सुपारी अवश्य स्थापित करें, इस समय दीपक अवश्य जलते रहना चाहिए, अब साधक राहु बीज मन्त्र का जप करें, यह बीज मन्त्र केवल **'काली हकीक माला'** से ही जप किया जाना चाहिए।

बीज मन्त्र

॥ ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः॥

अपने स्थान पर ही बैठे-बैठे दस माला बीज मन्त्र का जप करें, शास्त्रों के अनुसार राहु दोष पूर्ण रूप से दूर करने हेतु कुल अठारह हजार मन्त्र जप किया जाना चाहिए, इस प्रकार साधक शुक्रवार को भी मन्त्र जप सम्पन्न कर सकता है, जब मन्त्र जप अनुष्ठान पूरा हो जाय, तो सारी वस्तुएं उसी काले कपड़े में बांध कर किसी चौराहे पर रख दें, केवल राहु यन्त्र को अपने पूजा स्थान में स्थापित रखें, लेकिन यह ध्यान रहे कि दिन प्रतिदिन की पूजा हेतु जो सात्विक यन्त्र, मूर्तियां, शिवलिंग इत्यादि स्थापित हैं, उनके साथ राहु यन्त्र न रखें।

राहु दोष पूर्ण रूप से दूर हो जाने पर साधक को उदर सम्बन्धी पीड़ा, पांवों से सम्बन्धित पीड़ा दूर होती है, इसके अतिरिक्त यदि किसी कारणवश बदनामी का योग होने की आशंका होती है, तो वह भी दूर होती है, व्यक्ति को शत्रुओं पर विजय तथा राजनीति में अत्यन्त श्रेष्ठ स्थान पर पहुंचाता है, और उसका प्रभाव बढ़ाता है। *

नाथ सम्प्रदाय की

अद्भुत् हठ योग साधना

शिव विद्या में पूर्ण पारंगत नाथ सम्प्रदाय ही है, इनकी साधना का मूल आधार गुरु भक्ति और गुरु भक्ति के साथ शिव साधना है जिसे 'महायोग विद्या' भी कहा जाता है, इस पूर्णता हेतु जिस योग विशेष का प्रयोग किया जाता है, वह हठ योग ही है।

भक्ति और शक्ति दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, जब तक पूर्ण भक्ति, पूर्ण साधना नहीं होती, तब तक शक्ति प्राप्त नहीं हो सकती, इसके लिए एक दृढ़ निश्चय से साधना की ओर प्रवृत्त होना पड़ता है, हठ योग तो मन को पूर्ण नियंत्रण में कर पूर्णता प्राप्त करने का महाभाव है।

हठ योग के मूल रूप से सात अंग हैं, और इसी क्रमानुसार साधना सम्पन्न की जाती है, ये सात अंग हैं— कर्म, आशा, मुद्रा, प्रत्याहार, प्राणायाम, ध्यान, और समाधि, ये सात क्रम शरीर शुद्धि, दृढ़ता, स्थिरता, धीरता, चैतन्यता, आत्म ज्ञान, कुण्डलिनी जागरण, एवं पूर्णता के स्वरूप हैं।

हठ योग साधना में गुरु कृपा का महत्व सर्वाधिक है, "हठ योग प्रदीपिका" में लिखा है कि—

नमः शिवाय गुरवे नादबिन्दुकलात्मने।
निरंजनपदं याति नित्यं यत्र परायणः॥

अर्थात् जो मूल नाद बिन्दु कला है, वह गुरुदेव ही हैं, वही शिव स्वरूप हैं, नित्य प्रति गुरु ध्यान से ही निरंजन पद प्राप्त हो सकता है।

गुरु गोरखनाथ लिखते हैं—

**गुरु से ग्यान, ग्यान सु बुधि भई। बुधि सूं अकल प्रकासो।
भनत भरथरी हरिपद परस्या। सहज भया अबिनासी॥**

यहां ज्ञान, बुद्धि और अक्ल से तात्पर्य व्यक्ति के जीवन में पूर्णता से है, और जब तक पूर्ण हठ भाव से कोई साधना की ओर आगे नहीं बढ़ता है तब तक सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती, सिद्धि से ही शरीर एवं मन दोनों पुष्ट होते हैं।

हठ योग साधना कैसे ?

इस साधना हेतु अपने साधनाक्रम में बहुत अधिक फेर बदल करने की आवश्यकता नहीं है, मन को दृढ़ कर एक मार्ग पकड़ना है, और यही मार्ग अमृतत्व प्राप्ति और मृत्यु विजय रूपी फल सिद्धि का योग है।

यह विशिष्ट पूजा केवल सोमवार को ही सम्पन्न की जाती है, सोमवार के दिन प्रातः स्नान कर ऊनी आसन पर अपने पूजा स्थान पर बैठें, अपने सामने **गुरु यन्त्र** तथा **गुरु चित्र** स्थापित करें, एक ओर धूप और दीपक अवश्य जला दें, स्वयं के रक्त चन्दन का तिलक लगा कर गुरु पूजन सम्पन्न करें, गुरु यन्त्र के सामने मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त पारद निर्मित **"नवनाथ गुरु गुटिका"** स्थापित करें और इस गुटिका पर भी रक्त चन्दन चढ़ाएं, तथा दोनों हाथ जोड़ कर इक्यावन बार निम्न मन्त्र बोलें–

ज्ञान-पारखी सिद्ध हैं, चन्द्र चौरंगी नाथ।
जिनका वन-पति रूप है, उन्हें नमाऊं माथ ॥
'सत्य-नाथ' हैं सृष्टि-पति, जिनका है जल रूप।
नमन करत हैं आपको, स-चराचर के भूप ॥

अब अपने सामने शिवलिंग स्थापित करें और इस शिवलिंग के सामने **"सात गोरखनाथ सप्तक"** स्थापित करें, ये सप्तक रक्षा मन्त्र, अष्ट सिद्धि मन्त्र, शत्रुहन्ता मंत्र ऋद्धि-सिद्धि मन्त्र, अनंग मन्त्र तथा शान्ति मन्त्र से सिद्ध किये होते हैं और साधना में इनका ही विशेष स्थान है।

प्रत्येक गोरखनाथ सप्तक पर सिन्दूर का तिलक करें, तथा प्रसाद स्वरूप बूंदी के लड्डू, नारियल, अगरबत्ती तथा लाल पुष्प व अक्षत चढ़ाएं।

अब साधक वीर मुद्रा में बैठ कर निम्न सिद्धिप्रदायक मन्त्र का १०८ बार जप करें—

ॐ त्वं ज्ञानं, त्वं ध्यानं, त्वं योगं, त्वं तत्वं, त्वं बीजं, महात्मानं स्वं शक्तिः, शक्ति-धारणं त्वं महा-देव-स्वरूपं। सर्व सिद्धिर्भवेत। त्वं नागेश्वरं, नाग-हार च त्वं, वन्दे परमेश्वरं, ब्रह्म-ज्ञानं, ब्रह्म ध्यानं, ब्रह्म-योगं, ब्रह्म-तत्वं, ब्रह्म-बीजं महात्मनः। महा-भैरव महा-भय-विनाशनं देवता, सर्व सिद्धिर्भवेत्।

विशेष बात यह है कि यह मन्त्र जप करते समय अपने सामने स्थापित "गुरु गुटिका" को अपने दाहिने हाथ की मुठ्ठी में बन्द कर वीर मुद्रा में बैठ कर जप करना चाहिए।

जप पूर्ण होते ही गुरुदेव को साष्टांग दण्डवत् प्रणाम करें, अपनी पूर्णता हेतु प्रार्थना करते हुए शिव आरती तथा गुरु आरती सम्पन्न करें।

अब साधक अपने घर में सात अलग-अलग स्थानों पर गोरखनाथ सप्तक रख दें, तथा जो मन्त्र सिद्ध **गुरु गुटिका** है, उसे काले कपड़े में बांध कर अपनी दाहिनी भुजा में धारण कर लें।

साधना का यह प्रयोग जितना सरल दिखाई दे रहा है, प्रभाव में उतना ही प्रबल एवं तेजस्वी है, साधक साधना करते-करते अपने भीतर एक तेज अनुभव करता है, और उसे गुरु कृपा, शिव कृपा का पूर्ण लाभ प्राप्त होता है, भय, व्याधि, पीड़ा का कैसा भी भयंकर दोष हो, इस प्रयोग से निश्चय ही दूर हो जाता है। ●

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

प्रयोग	पृष्ठ	सामग्री	मूल्य
महालक्ष्मी कल्पवास—	९		
प्रथम दिवस पूजन विधान	११	१-विश्वामित्र प्रणीत पद्मावती चित्र, २-सियार सिंगी, ३-गोमतीचक्र, ४-लघु शंख, ५-मधुरूपेण रुद्राक्ष, ६-त्रिवली हकीक, ७-कल्पवृक्ष वरद, ८-पद्मावती यन्त्र, ९-शत् अष्टोत्तारी महालक्ष्मी सपर्या, १०-दुर्लभ विश्वामित्र चैतन्य पद्म, ११-महालक्ष्मी सिद्धि यन्त्र, १२-क्षीरोद्भुत कामधेनु विग्रह, कमलगट्टा माला। महालक्ष्मी कल्पवास पूजा पैकेट विशेष छूट पर—	३००)रु०
द्वितीय दिवस–ऋणमोचन लक्ष्मी प्रयोग	१४	ऋणमोचन लक्ष्मी तन्त्र फल	१०१)रु०
		मूंगा या स्फटिक माला	८०)रु०
व्यापार वृद्धि एवं कार्य सिद्धि प्रयोग	१४	भाग्योदय यन्त्र	१५०)रु०
		शंख माला	७५)रु०
तृतीय दिवस–धनाध्यक्ष कुबेर प्रयोग	१६	कुबेर यन्त्र	२४०)रु०
		कमलगट्टा माला	६०)रु०
लक्ष्मी साबर प्रयोग	१६	मोती शंख	३५)रु०
गुरु बिन ज्ञान कहां से पाऊं	१७	गुरु तत्व यन्त्र	१२०)रु०
		छः सिद्धि तत्व चक्र	९०)रु०
		सर्वसिद्धि स्वरूपिणी गुरु रहस्य माला	३००)रु०
कामदा मनोहारी यक्षिणी	२५	सर्वेष्ठ कामपूर्णी सिद्ध यक्षिणी यन्त्र	१२०)रु०
		सोलह अभीष्ट सिद्धि क्तिवाह	९६)रु०
		यक्षिणी माला	१२०)रु०
सिद्ध सरल विरल प्रयोग—	२९	—	—
१-आकस्मिक धन प्राप्ति का मणिभद्र प्रयोग		मणिभद्र यन्त्र	१२०)रु०
२-विशेष कार्य सिद्धि प्रयोग	३०	हैरम्ब	३०)रु०
३-रोग निवारण प्रयोग	३०	श्वेतार्क गणपति	३००)रु०
		स्फटिक या पारद शिवलिंग	१५०)रु०
४-भय बाधा शान्ति–शरीर रक्षा प्रयोग	३१	भैरव गुटिका	७५)रु०
५-सन्तान उन्नति प्रयोग	३१	सरस्वती यन्त्र	४५)रु०
राहु प्रयोग	३७	राहु यन्त्र	६०)रु०
		काली हकीक माला	११०)रु०
हठयोग साधना	३९	ताम्र गुरु यन्त्र	१५०)रु०
		गुरु चित्र	२०)रु०
		नवनाथ गुटिका	६०)रु०
		सात गोरखनाथ सप्तक	७०)रु०

रजि० नं० ३५३०५/८१ पोस्टल एल०आर०जे० ३६६७/८६-८७

गूंज उठा जयघोष

जहां सब कुछ निर्मल, मोहक, परिपूर्ण था

गुरु पूर्णिमा महोत्सव वीडियो कैसेट

★ बैंगलौर में सुसम्पन्न गुरु पूर्णिमा महोत्सव हजार-हजार दीयों का ज्योति समारोह था।

★ जिसमें ज्ञान, भक्ति, योग, साधना, प्रेम, उत्साह, आह्लाद, समर्पण, संगीत की सहस्र धाराओं के उन्मुक्त प्रवाह का संगम था।

★ 'सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' इस समारोह की वीडियो कैसेट तो हर शिष्य के प्राणों में नवीनता का संचार करने वाली ही बनी है।

★ स्वयं बार-बार देखने, पूरे परिवार को दिखाने हेतु हर शिष्य-साधक के लिए आवश्यक एक धरोहर।

मूल्य २४०)रु० (लागत मात्र)

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान
डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी
जोधपुर-३४२००१ (राज०)